उपनिषद्-सुधा बिन्दु

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः। नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व ।।

(कठोपनिषद् : १/१/९)

(यम ने कहाह्नह्न)''ब्राह्मण देवता! आप हमारे सम्मान्य अतिथि हैं। आपको नमस्कार है। (मुझसे अपराध हो गया है। मेरे इस दोष की निवृत्ति हो कर) मेरा कल्याण हो! आपने मेरे घर में तीन रात्रियों तक बिना भोजन किये हुए निवास किया है। अतः आप मुझसे प्रत्येक रात्रि के बदले तीन वरदान माँग लीजिए।''

शिक्षा वह है, जो भगवान् और मनुष्य को प्यार करना सिखाये। शिक्षा वह है, जो विद्यार्थियों को यह निर्देश दे कि वे सत्यवादी, नैतिक, विनीत तथा दयावान् बनें। शिक्षा वह है, जो उन्हें बताये कि वे सदाचरण, सम्यक् चिन्तन, सम्यक् जीवन-यापन, सम्यक् कर्म, आत्मोत्सर्ग तथा आत्मज्ञान-प्राप्ति का अभ्यास करें। जिससे चरित्र, पहल शक्ति तथा मानव-माधव के प्रति सेवा-भावना का विकास होता है, वही वास्तविक शिक्षा है।

ह्नह्नस्वामी शिवानन्द

सद्गुरु नवमणिमाला

ज्ञानभास्कर, महामहोपाध्याय श्री एस. गोपाल शास्त्री जी

लोकान् ज्ञानविवर्जितान् कलिमलौघापास्तशक्तीन् वृथा-
कालक्षेपपरान् भवार्तिविवशानुद्धर्तुकामः स्वयम् ।
सर्वज्ञः करुणानिधिः पशुपतिः क्लृप्तावतारो भुवि
प्रख्याते हिमभूधरे परशिवानन्दात्मना भ्राजते ।।१।।

कलियुग की अनिष्टकारी शक्ति से प्रताड़ित, अज्ञानान्धकार में नष्टप्राय जीवन जीते हुए तथा संसार की विपत्तियों से शक्तिहीन हुए मानव मात्र के रक्षार्थ दृढ़ संकल्प, सद्गुरु शिवानन्द, साक्षात् भगवान् शिव स्वयं ही प्रख्यात हिमालय के मध्य देदीप्यमान हो रहे हैं ।।१।।

भक्तानां बहुपुण्यकर्मपरिणामेनाऽवतीर्णो महान्
ज्ञानालोकनिरस्तमोहतिमिरो लोकस्य जाड्यं हरन् ।
धर्माध्वन्यमले धियस्सकरुणं यश्चोदयत्यञ्जसा
सोऽयं सद्गुरुभास्करो विलसति द्वासप्ततौ वत्सरे ।।२।।

भक्त-समुदाय के शुभ कर्मों एवं प्रार्थनाओं के फलस्वरूप जन्म धारण करने वाले सद्गुरुमहाराज ने सूर्य के समान अपने ज्ञान के प्रकाश द्वारा अज्ञानान्धकार को नष्ट कर दिया है तथा संसार के उत्साहहीनता-रूपी जाड़े को दूर कर दिया है। ऐसे सद्गुरुमहाराज ने मानव-जाति को करुणापूर्वक सदैव धर्मपथ पर अग्रसर करते हुए, अब ७२ वें पावन जन्म दिवस में पदार्पण किया है ।।२।।

रोगान् कायिकमानसान् पदजुषां निष्कासयन्नादरात्
मोहान्ध्यं व्यपनीय मानसदृशं यो भासयत्यञ्जसा ।
सोऽयं निर्मलसद्यशोमयरथारूढो गुरुक्ष्मापतिः
संसाराम्बुधिनाविको विजयते क्षेमाय लोकस्य हि ।।३।।

संसार-सागर से पार उतारने वाली नौका के प्रमुख नाविक सद्गुरुमहाराज, जो सहानुभूतिपूर्वक अपने भक्तों के अन्तर्चक्षुओं को खोल कर उनके शारीरिक एवं मानसिक रोग निवारण करते हुए निर्मल यश के रथ पर आरूढ़ हैं, वे मानव-कल्याण हेतु करुणापूर्वक दीप्तिमान् हो रहे हैं।।३।।

पूर्वस्मिन् वयसि स्वसिद्धकरुणाप्रेमादिना प्रेरितो
दीनत्राणममोघधर्ममवधार्यान्यूनहृन्निश्चयः ।
लोकानन्दकवैद्यशास्त्रजलधेः पारीणतामार्जयन्
आर्तान् पालितवान्महांस्तु मलयाद्वीपान्तरे वासकृत् ।।४।।

पद-दलितों की सहायता निश्चित रूप से प्रत्येक व्यक्ति का सर्वोच्च कर्तव्य मानते हुए, सद्गुरुमहाराज, अपने हृदयस्थ एवं अन्तर्हित करुणा तथा प्रेम आदि सद्गुणों से प्रेरित हो कर प्रारम्भिक जीवन-काल में ही चिकित्सीय ज्ञान से परिपूर्ण एक श्रेष्ठ चिकित्सक के रूप में रोगियों के कष्ट-निवारण हेतु मलाया जा बसे ।।४।।

रुग्णानौषधदानतो द्रविणतो निस्स्वांश्च रक्षन् मुदा
दृश्यं सर्वमनित्यमेव गणयन् वैराग्यशक्त्याश्रितः।
त्यक्त्वा बन्धकमेषणात्रयमहो! निष्कृत्तपाशो गुरु-
र्धीरो धिक्कृतषड्रिपुर्विजयते लोकस्य भाग्योदयात् ।।५।।

रुग्णों का औषधि द्वारा, निर्धनों का धन द्वारा कष्ट निवारण करते हुए सद्गुरुमहाराज ने समस्त दृश्य-जगत् की अनित्यता को अनुभव किया तथा समस्त लौकिक बन्धनों की इच्छाओं (एषणात्रय) का परित्याग करके, काम, क्रोध इत्यादि षड्रिपुओं से ऊपर उठ कर उन्होंने वैराग्य का आश्रय

नोट : *ज्ञानभास्कर, महामहोपाध्याय श्री एस. गोपाल शास्त्री जी द्वारा परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की ७२ वें जन्म दिवस पर रचित।*

ग्रहण किया। विश्व-भर के सौभाग्य से, वे विजयी हो कर उद्भासित हो रहे हैं।।५।।

श्रीमद्भारतजीविभाग्यमरुता द्वीपान्तराच्चालितो
व्योम्नाऽतीत्य सुपावनान् जनपदान् योगीशधाराधरः।
कारुण्यामृतभारनिर्भरवपुर्लोकस्य तापं हरन्
प्रालेयागतटेऽवतीर्य सततं ज्ञानामृतं वर्षति ।।६।।

भारतवर्ष के लोगों के सौभाग्य-पवन पर आरूढ़, यह महान् योगी सद्गुरुमहाराज, अनेक पावन देश-देशान्तरों में, विस्थापित मेघों के समान विस्तृत रूप में फैल गये; किन्तु अपने अन्तर्हित करुणा के असह्य भार के कारण हिमालय की घाटियों में ठहर गये तथा वहाँ से ही सन्तप्त विश्व को शीतलता प्रदान करने के लिए निरन्तर अपने ज्ञानामृत की वर्षा करने लगे।।६।।

विद्यापारदृशं विवेचकदृशं विज्ञानपाथोनिधिं
विद्यादानविचक्षणं विविधशास्त्रेषु प्रसन्नेक्षणम् ।
विज्ञाभिष्टुतवैभवं विमलधीविज्ञाततत्त्वार्थकं
विश्वख्यातयशस्ततिं परशिवानन्दं भजे सद्गुरुम् ।।७।।

मैं उन सद्गुरु परशिवानन्द की उपासना करता हूँ जो विद्या-विशारद हैं, विवेक-स्रोत हैं, ज्ञानाम्बुधि हैं, जो विविध शास्त्रों के विशेषज्ञ हैं तथा महान् विद्वानों द्वारा सम्मानित हैं; जिनकी निर्मल प्रज्ञा सम्पूर्ण तत्त्वों की ज्ञाता है तथा जो निश्चित रूप से विश्व-विख्यात हैं एवं निस्सन्देह महान् हैं ।।७।।

वेदान्तागमयोगभक्तितपसामेकान्तसद्मायितो
नादब्रह्मविलीनशुद्धहृदयः सर्वं समं भावयन् ।
लोकानुग्रहतत्परश्च वयसां द्वासप्ततिं तीर्णवान्
पूर्णारोग्यशताभिषेकमहभाग् भायात्सुखं सद्गुरुः।।८।।

हमारे सद्गुरुमहाराज, जो वेदान्त, शास्त्र, योग, भक्ति और तपस् के निधान हैं, जिनका शुद्ध हृदय नादब्रह्म में विलीन है, जो सबके प्रति समदृष्टि रखते हैं तथा जिनकी एकमात्र इच्छा समस्त विश्व को आशीर्वाद प्रदान करते रहने की है, वे आज ७२ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। ये महान् सद्गुरु पूर्ण-आरोग्य सहित सुखपूर्वक शताभिषेक मनायें, यही प्रार्थना है ।।८।।

दोषाणामपसारणात् तनुमनोरोगार्तिनिर्वापणात्
मोहध्वान्तनिवारणाज्जनततेः सन्मार्गसञ्चारणात् ।
लोकोद्धारणतश्च सर्वजनतावन्द्यो भवान् सद्गुरो!
दीर्घायुष्यमनामयं च लभतां कुर्वन् जगन्मङ्गलम् ।।९।।

हे सद्गुरुमहाराज, आप सर्वसम्मानित हैं, क्योंकि आपने सबको धर्म और सद्गुणों का पथ-प्रदर्शित किया है, सबके तन-मन के रोग निवृत्त किये हैं तथा समस्त संसार का अज्ञान दूर करके उन्नत किया है। हमारी प्रार्थना है कि आप दीर्घ आयुष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य लाभ करते हुए इसी प्रकार सदैव विश्व-कल्याण में निरत रहें ।।९।।

सद्गुरुनवमणिमाला ग्रथितेयं ज्ञानभास्करेणाद्य ।
जन्मर्क्षे रथकलिते धार्या कण्ठे सभक्तिभरमार्याः ।।१०।।

हे मान्यवर! परम पूज्य सद्गुरुदेव के ७२ वें पावन जन्म दिवस पर, उनके भक्त, ज्ञानभास्कर द्वारा ग्रथित एवं समर्पित यह 'सद्गुरु-नवमणिमाला' का हार सभी सच्चे भक्तों द्वारा भक्तिपूर्वक धारण करने योग्य है ।।१०।।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

मनुष्य में अच्छाई-बुराई दोनों का मिश्रण रहता है। सभी प्राणियों में गुण-अवगुण दोनों रहते हैं। अन्य प्राणियों की अपेक्षा जो विशेषता मनुष्यों में है, वह उनके संयमादि गुणों के अभ्यास के कारण है। क्रोध हानिकारक कार्य करता है, संयम दुष्कर्मों पर अंकुश रखता है और गुणों के अभ्यास (सदुपयोग) का अवसर प्रदान करता है। क्रोध के नियन्त्रण से दुष्टता पर नियन्त्रण हो जाता है। भलाई ही स्थायी रह सकती है। क्रोध तो कठोरता, क्रूरता, पीड़ा, हानि, प्रतिरोध, हिंसा, युद्ध तथा विनाश का द्वार है। क्रोध वश में हो जाने पर बुद्धि निर्मल और विवेक जागृत हो जाता है। आपको भले-बुरे, उचित-अनुचित का ज्ञान होने लगता है। सदाचार के सीधे-सँकरे पथ पर आप निष्कण्टक अग्रसर होते रहते हैं।

स्वामी शिवानन्द

ब्रह्मचर्य-साधना के कुछ प्रभावशाली साधन १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

जब तक आप इन पूरक साधनाओं का पालन नहीं करते, तब तक आप अखण्ड ब्रह्मचर्य नहीं रख सकते हैं। आपको अपने भोजन तथा अपनी संगति की ओर विशेष ध्यान देना होगा। कुछ भी, जिससे मन में अपवित्र विचार उत्पन्न हों, कुसंगति है। हे साधको! सांसारिक लोगों की संगति से दूर भाग जायें। नगरों के कोलाहल तथा संसार की खलबली से अलग चले जायें। सांसारिक विषयों की चर्चा करने वाले आपको शीघ्र ही कलुषित कर देंगे। आपका मन दोलायमान हो जायेगा तथा इधर-उधर भटकने लगेगा। आपका पतन होगा।

प्रणयलीला-सम्बन्धी उपन्यास अथवा कथा-साहित्य न पढ़ें। चलचित्र-गृह तथा नाट्यशाला न जायें। अवांछनीय लड़कों से मैत्री न करें। आपके लिए आवश्यकता है अपनी प्रतिजाति के प्रति अपने दृष्टिकोण के, अपनी मनोवृत्ति के आमूल-चूल परिवर्तन करने की। प्रत्येक स्त्री में भगवती माँ के दर्शन करें तथा प्रत्येक स्त्री को अपनी माता समझें।

स्वाद पर नियन्त्रण

प्रथम, आहार-सम्बन्धी नियन्त्रण। आत्म-नियन्त्रण तथा स्वाद अथवा जिह्वा-नियन्त्रण में घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिसने जिह्वा पर नियन्त्रण पा लिया, उसने अन्य सभी इन्द्रियों पर भी नियन्त्रण पा लिया।

सुस्वादु राजसिक भोजन प्रजननेन्द्रिय को उद्दीपित करता है। मांस, मत्स्य, मदिरा तथा धूम्रपान त्याग दें। मांस व्यक्ति को वैज्ञानिक बना सकता है; किन्तु वह उसे दार्शनिक, सन्त तथा सात्त्विक व्यक्ति कभी नहीं बना सकता है।

धीरे-धीरे नमक तथा इमली त्याग दें। नमक काम-वासना तथा मनोविकार उद्दीपित करता है। नमक इन्द्रियों को उद्दीपित करता है तथा बलवती बनाता है। नमक का त्याग मन तथा इन्द्रियों को शान्त अवस्था में लाता है। यह ध्यान में सहायता करता है। आपको प्रारम्भ में किंचित् कष्ट होगा, बाद में आप नमक-रहित भोजन में रस लेने लगेंगे। न्यूनातिन्यून छह मास तक अभ्यास करें। इस प्रकार आप अति-शीघ्र ही आत्म-स्वरूप का साक्षात्कार कर सकेंगे। इस विषय में आपके लिए जो आवश्यक है, वह है गम्भीर तथा सच्चा प्रयास करने की। भगवान् श्री कृष्ण आपको अध्यात्म-पथ पर चलने तथा जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने का साहस तथा बल प्रदान करें!

रात्रि में अपने पेट पर अधिक भार न डालें। रात्रि का भोजन बहुत ही हलका होना चाहिए। आधा लीटर दूध तथा कुछ फल रात्रि के लिए उपयुक्त आहार है।

ब्रह्मचर्य तथा जिह्वा-नियन्त्रणहृहदोनों के लिए प्रातःकाल कुछ तुलसी-पत्रों का सेवन कीजिए। सायंकाल में नीम की पत्तियाँ लीजिए। एक पत्ती से आरम्भ कीजिए तथा प्रतिदिन एक पत्ती बढ़ाते हुए दश तक ले जाइए। कुछ महीनों तक दश पत्तियाँ लीजिए, तब आप इसे बीस पत्तियों तक बढ़ा सकते हैं। यह बहुत ही लाभकर है।

कुसंगति से बचें

अश्लील चित्र, अशिष्ट शब्द तथा प्रणय-लीलाओं के वर्ण्य-विषय वाले उपन्यास हृदय में काम-वासना उद्दीपित करते और हेय, नीच तथा अवांछनीय भाव उत्पन्न करते हैं; जब कि भगवान् कृष्ण, भगवान् राम तथा प्रभु यीशु के सुन्दर चित्र का दर्शन तथा सूरदास, तुलसीदास और त्यागराज के उदात्त गीतों का श्रवण हृदय में उत्कृष्ट भाव तथा सच्ची भक्ति उद्दीपित करते, दिव्य रोमांच तथा आनन्द और प्रेम के अश्रु

उत्पन्न करते तथा मन को तत्काल भाव-समाधि तक उन्नत बनाते हैं। क्या अब आप इनके अन्तर को स्पष्ट रूप से देखते हैं?

जब आप स्त्री-पुरुषों की सम्मिलित नृत्य-सभा में उपस्थित होते हैं अथवा जब आप 'द मिस्ट्रीज़ आफ द कोर्ट आफ लंडन' पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तब आपके मन की स्थिति कैसी होती है? जब आप वाराणसी के स्वामी जयेन्द्रपुरी जी महाराज के सत्संग में उपस्थित होते हैं अथवा जब आप ऋषिकेश में गंगा जी के तट पर एकान्त स्थान में होते हैं अथवा जब आप आत्मोन्नयनकारी प्राचीन उच्च साहित्य, उपनिषद् का स्वाध्याय करते हैं, तब आपके मन की स्थिति कैसी होती है? अपनी मानसिक स्थितियों में साम्य तथा वैषम्य को देखिए। मित्र! स्मरण रखिए कि कुसंगति के समान आत्मा का अत्यधिक विनाशकारी कुछ भी नहीं है। साधकों को सभी प्रकार की कुसंगति से निर्ममतापूर्वक बच कर रहना चाहिए। उन्हें स्त्री, धनाढ्य व्यक्तियों के विलासमय आचरण, तिक्त भोजन, वाहन, राजनीति, कौशेय वस्त्र, पुष्प, इत्र आदि से सम्बन्धित कहानियाँ नहीं सुननी चाहिए; क्योंकि मन इनसे सहज ही उत्तेजित हो उठता है। वह विलासप्रिय लोगों के आचरण का अनुकरण करने लग जायेगा। कामनाएँ उत्पन्न होंगी। आसक्ति भी मन में प्रवेश कर जायेगी।

चलचित्र व्यक्ति में बुरी प्रवृत्ति उत्पन्न करता है। वह प्रदर्शन में उपस्थित हुए बिना एक दिन भी नहीं रह सकता है। उसके नेत्र कुछ अर्धनग्न चित्र तथा कुछ प्रकार के रंग देखना चाहते हैं तथा उसके श्रोत्र स्वल्प संगीत सुनना चाहते हैं। नवयुवक तथा नवयुवतियाँ जब चलचित्र में अभिनेताओं को चुम्बन करते तथा आलिंगन करते देखते हैं, तो वे कामुक हो जाते हैं। जो आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना विकास चाहते हैं, उन्हें चलचित्र से पूर्णतया बच कर रहना चाहिए। उन्हें तथाकथित धार्मिक चित्रों में भी नहीं उपस्थित होना चाहिए। वे वास्तव में धार्मिक चित्र नहीं हैं। यह लोगों को आकर्षित करने तथा धन एकत्र करने की एक चाल है। उनमें काम करने वाले अभिनेताओं की आध्यात्मिक क्षमता ही क्या है? आध्यात्मिक व्यक्ति ही दर्शकों के मन को उन्नत करने वाली सदाचारमयी प्रभावोत्पादक कहानियाँ प्रस्तुत कर सकते हैं।

यदि आपकी उत्तेजक चलचित्रों को देखने हेतु जाने की आदत है, तो उसे समाप्त कीजिए। कहीं भी अशिष्ट विषयी दृश्य न देखिए। नग्न चित्रों को देखने में लिप्त न होइए। ये सब काम-वासना की वृद्धि तथा वीर्य को क्षीण करने का कारण हैं। आपको इनसे दृढ़तापूर्वक दूर रहना चाहिए।

उपन्यास-वाचन एक अन्य बुरी आदत है। उपन्यास न पढ़ें। वे मन को दूषित करते हैं। शिकार को अपने चमकीले पाश में जकड़ने के लिए उपन्यास पाश्चात्य सभ्यता की जंजीरें हैं। जिन पत्रिकाओं से निम्न नैसर्गिक प्रवृत्ति उत्तेजित होती हो, उन्हें न पढ़ें।

अश्लील गीत मन में बहुत ही बुरा प्रभाव तथा गम्भीर संस्कार डालता है। साधकों को, जहाँ दूषित गीत गाये जाते हों, वहाँ से पलायन कर जाना चाहिए।

जो बाह्य पदार्थ काम-वासना को प्रोत्साहित करने वाले हों, उनसे अपने मन तथा नेत्रों को दूसरी दिशा में ले जाने का यथाशक्य प्रयास करें। जिस प्रकार के अध्ययन, वार्तालाप, कल्पना तथा साहचर्य से काम-वासना के उत्तेजित होने की सम्भावना हो, उन्हें त्याग दें। उन लोगों से बातचीत न करें जो उत्तेजक समाचार सूचित करने तथा आपके मानसिक सन्तुलन को विक्षुब्ध करने को उत्सुक हों। आध्यात्मिक रूप से उन्नत व्यक्तियों के साथ रहें तथा जो पुस्तकें अपरोक्ष रूप से आध्यात्मिक हों, उनके अतिरिक्त अन्य सभी पुस्तकों का अध्ययन बन्द कर दें।

जब मन में कामुक विचार उठें, तो उनसे संघर्ष न करें। सर्वोत्तम विधि है कि उनकी उपेक्षा की जाये। यदि आप ऐसा करने में सफल न हों, तो किसी ऐसे व्यक्ति की संगति में रहें जो आध्यात्मिकता में आपसे वरिष्ठ हो, जो आध्यात्मिकता में आपसे अधिक उन्नत हो। यदि आप एकान्त में जायेंगे, तो मन आपका पीछा करेगा और आपको विषयी विचारों में निमग्न कर देगा। आप अपना सन्तुलन खो बैठेंगे। सावधान रहें। थोड़ी-सी सावधानी से कामुक विचार जाते रहेंगे। **(अनूदित)**

वह ज्ञाता (जानने वाला) कौन?

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

हमारे धर्मग्रन्थों में उल्लेख आता है कि हमारे वैदिक और उपनिषद् कालीन पूर्वज क्रमशः ज्ञात से अज्ञात की ओर, दृश्य से अदृश्य की ओर, प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर अग्रसर होते गये और पृथ्वी, जल, अग्नि तथा वायु सभी दृश्य तत्त्वों से होते हुए वे आकाश तक पहुँच गये और अन्ततः उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि खः, यह अन्तरिक्ष का आकाश-तत्त्व ही निश्चित रूप से परम सत्य, ब्रह्म है, क्योंकि यह अमूर्त, अदृश्य, अलभ्य और सूक्ष्मातिसूक्ष्म है। उन्होंने कहाह्वह्व**'खं ब्रह्म'**।

किन्तु बाद में कोई मनीषी नकारात्मक भाव से शिर हिलाने लगे, ''न, न, आकाश परम तत्त्व नहीं हो सकता; क्योंकि जो कह रहा है 'खं ब्रह्म', वह कौन है? यह कौन है जो जानता है और घोषित करता है कि मैं जानता हूँ कि खं ब्रह्म है? यह ज्ञाता कौन है? यह द्रष्टा कौन है? यह जानने वाली सत्ता कौन है?

''यदि यह देखने वाली सत्ता कहती है कि मुझे ज्ञात है कि खं ब्रह्म है, तब यह द्रष्टा निश्चित रूप से जागरूक है कि वह है, कि 'मैं हूँ; अतः मैं घोषित करता हूँ कि आकाश ब्रह्म है।' वह सत्ता अवश्यमेव ही वह सत्ता है, जो अपने अस्तित्व के प्रति सचेत है; क्योंकि जब तक कोई अपने अस्तित्व के प्रति सचेत नहीं है, तब तक वह कुछ भी कह अथवा कर नहीं सकता। किसी के सम्बन्ध में जानने और बताने से पूर्व उस जानने वाले की अपनी सत्ता का होना और उसके सम्बन्ध में सचेत होना अनिवार्य है। कोई भी जड़ या अचेतन सत्ता न तो कुछ भी जान सकती है, न ही कुछ बतला सकती है।''

अतः वह इस निष्कर्ष पर आये कि चेतना का, उज्ज्वल जाग्रत जागरूकता का होना निश्चित रूप से पूर्णतया अनिवार्य और आवश्यक है। यह आकाश से भी कहीं अधिक पहले से ही है; क्योंकि यही वह सत्ता है जिसे आकाश का बोध है, जिसे आकाश रूप से होने वाले तत्त्व का ज्ञान है और उसके सम्बन्ध में बता सका है।

अतः निश्चित रूप से वह चैतन्य ही परम ब्रह्म हो सकता है। उन्होंने तब कहा : ''**प्रज्ञानं ब्रह्म।**'' **'प्रज्ञानम्'** का अर्थ हैह्वह्वचेतना का, जागरूकता का होना। **'प्रज्ञानं ब्रह्म'** ऋग्वेद का महावाक्य है और इसका अर्थ हैह्वह्वचैतन्य ब्रह्म है। उस परम सत्ता की अनुभूति करके उन्होंने घोषित किया : ''**अहं ब्रह्मास्मि**''ह्वह्वमैं वह शुद्ध चैतन्य हूँ। यह यजुर्वेद का महावाक्य है। जिस गुरु ने अपने निज आत्म-स्वरूप में उस शुद्ध चैतन्य की अनुभूति प्राप्त कर ली है, वह अपने योग्य शिष्य को ज्ञानोपदेश देते हुए घोषित करते हैं : ''**तत्त्वमसि**ह्वह्वतुम ही वह शुद्ध चैतन्य हो। तुम वह ब्रह्म हो। तुम वह शुद्ध प्रज्ञानं हो।''

कई बार प्रश्न होता हैह्वह्व''परन्तु जागरूकता का अस्तित्व है, यह कहने के लिए कौन है जो जागरूक है?'' यह तो मूर्खतापूर्ण प्रश्न ही कहा जायेगा; क्योंकि अपने मूल सर्वोत्कृष्ट स्वाभाविक गुण के कारण इस जागरूक चैतन्य को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यह सर्वसाक्षी है। चैतन्य को स्वयं को सिद्ध करने के लिए किसी अन्य प्रमाण का आलम्बन नहीं चाहिए; क्योंकि यह तो स्वयं अन्य समस्त सत्ताओं को प्रमाणित करने में सक्षम है। यह स्वतःसिद्ध परम सत्ता है जो अन्य सब-कुछह्वह्वयह जगत्, सूर्य, चन्द्र, सितारे, महाकाश इत्यादि सबकी सत्ता का ज्ञाता है। अतः यही परम ब्रह्म है।

प्रत्येक प्राणी इस चेतना से सम्पन्न है। यह सबका निज-स्वरूप है। आपको यह जानने के लिए कि आप हैं, किसी अन्य को बतलाने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा करने

से आपका उत्तर होगाह्नह्न''तुम्हें बताने की आवश्यकता नहीं है, मुझे ज्ञात है कि मैं हूँ, मेरा अस्तित्व है।'' प्रातः उठते ही आपको ज्ञात होता है कि आप हैं, किसी को आ कर कहना नहीं पड़ता कि 'यह तुम हो'। आप ही अन्य सबको जानने वाले हैं, यह आत्म-जागरूकता स्वयमेव ही आपकी नित्य निरन्तर अवस्था है।

हमारे महान् मनीषियों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि जिज्ञासु को परम सत्ता का बोध कराने के लिए और उनके अपने निज-स्वरूप का तथा अपने और परमात्मा के परस्पर वास्तविक सम्बन्ध का बोध कराने के लिए केवल एक उचित सिद्धान्त आकाश की उपमा से ही हो सकता है। यद्यपि मनुष्य की भाषा में कई बार विचित्र ढंग से भी इसका उपयोग हो जाता है। जैसे यदि कभी कोई विशेष अवसर हो और अधिक स्थान की आवश्यकता हो (तो अँगरेजी भाषा में 'स्पेस' शब्द स्थान, खाली स्थान के लिए भी उपयोग किया जाता है), तो कह देते हैं कि सामान हटा दो ताकि कुछ और स्पेस (अर्थात् स्थान) बढ़ जाये। जैसे कि पहले वह स्पेस (स्थान) था नहीं, अब बना दिया गया है। अन्यथा स्पेस (अवकाश) की सत्ता तो सदा से थी और सदा रहेगी भी।

वेदान्त में मठाकाश और महाकाश का उदाहरण दिया जाता है अर्थात् मठ की सीमा में आबद्ध आकाश और बाह्य असीम महाकाश। कक्ष में सीमित आकाश तथा बाह्य आकाश में कोई अन्तर है क्या? बाहर के आकाश में वायुयान उड़ सकते हैं। कक्ष के भीतर के आकाश में वह नहीं उड़ सकते। अतः अन्तर सीमितता का है, विस्तार का है। बाह्याकाश असीम है, कक्ष के भीतर का आकाश छतों इत्यादि की सीमाओं में आबद्ध हो कर सीमित है। यह उपाधि है, किन्तु वस्तुतः उनमें कोई भेद नहीं है; दोनों बिलकुल एक-समान, प्रत्युत एक ही हैं।

इसी प्रकार जीवात्मा और परमात्मा में भी परस्पर कोई भेद नहीं है। आत्म-तत्त्व एक ही है। केवल जीवात्माओं में आत्म-तत्त्व कक्ष की दीवार और छत की भाँति नाम और रूप की सीमा में आबद्ध हो कर सीमित है। छोटी-सी चींटी तक में वही चैतन्य आत्म-तत्त्व है, किन्तु वह और अधिक आबद्ध है। और परमात्मा विस्तृत महाकाश की भाँति असीम, अबाधित है। इसलिए वे मठाकाश और महाकाश की सादृश्यता करते हैं।

महाकाश की अनन्त विशालता में समस्त चन्द्रमा, सितारे, नक्षत्र, समस्त विश्व इत्यादि विद्यमान हैं। किन्तु इन सबको एकत्रित करके, उसके सामूहिक रूप से करोड़, अरब गुणा से भी कहीं अधिक आप हैं, क्योंकि आप उन सबको जानने वाले हैं, ज्ञाता हैं। अतः स्वयं को पहचानें, आत्मज्ञान प्राप्त करें और जन्म-मरण के बन्धन से सदा के लिए मुक्त हो जायें। ईश्वर की कृपा और श्रद्धेय गुरुदेव के आशीर्वाद तथा अन्य समस्त सन्त जनों के आशीर्वाद आपको ऐसा कर सकने के योग्य बनायेंह्नह्नकहीं दूर भविष्य में नहीं; अभी, इसी जीवन में ही, जैसा कि गुरुदेव कहा करते थेह्नह्न''अभी ऐसा करो और सदा के लिए धन्य हो जाओ।''

भगवान् के आशीर्वाद आप सब पर हों!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

साधना के अवरोध

साधना के प्रमुख अवरोध हैंह्नह्नआलस्य, कामनाएँ, सिद्धियाँ, इन्द्रिय-सुख, अहंमन्यता आदि। इन अवरोधों को एक द्वार से निकालें, तो ये दूसरे द्वार से प्रवेश करके आपके सामने खड़े हो जायेंगे। और कुछ नहीं, तो लोगों का उपहास, उनके द्वारा किया गया अपमान, उनके द्वारा आपके विरुद्ध फैलायी गयी अफवाहें आपको विचलित कर देंगी। दृढ़-निश्चयी, सन्तुलित तथा अडिग बने रहें। शान्त रहें। अध्यात्म-मार्ग पर चलते रहें। आपको सत्य का अन्वेषण करना ही है, इसके लिए आपको चाहे कितना त्याग करना पड़े। **स्वामी शिवानन्द**

स्मृतिग्रन्थ अथवा धर्म-संहिता :

कर्मकाण्ड का अर्थ २

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

मन्दिरों में किया जाने वाला पूजा-पाठ भी एक कर्मकाण्ड है। इस कर्मकाण्ड के बहुत अच्छे परिणाम निकले हैं। सर्वोत्कृष्ट मूर्तिकला के प्रतिमानों के रूप में वास्तुकला की दृष्टि से भव्य अनेक मन्दिरों का निर्माण हुआ है। भारत में कर्मकाण्ड मात्र पूजा और प्रार्थना के यान्त्रिक कार्य और नित्यचर्या नहीं हैं। कला (जो धर्माचरण का एक रूप भी है) से भी उसका सम्बन्ध है। धर्म मात्र कुछ निश्चित सिद्धान्तों के रूढ़िवादी अभ्यास का विज्ञान नहीं है। यह सामाजिक जीवन में आत्मा की आवश्यकताओं का आकर्षक ढंग से प्रतिनिधित्व करता है।

भारत के तीर्थ-मन्दिर अपने रूप की भव्यता तथा अपनी रचना की कलात्मक पूर्णता के कारण प्रेरणा के स्थायी स्रोत रहे हैं। प्रेक्षकों के मन पर उच्च, अति-विशाल तथा गगनचुम्बी शिखरों वाले मन्दिरों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। इन ऊँचे मन्दिरों को देख कर उनके विचार एक रहस्यात्मक वैभव की ऊँचाई तक उठ जाते हैं। प्रसिद्ध मन्दिरों से वास्तुकला को संरक्षण प्राप्त हुआ है। न केवल भक्तों के, वरन् कला के निष्पक्ष गुण-ग्राहकों के लिए भी ये मन्दिर दैनिक जीवन की बाधाओं से मुक्त उदात्त भावनाओं के स्रोत रहे हैं। वेद-उपनिषदों में जिस विराट् पुरुष का गुणगान हुआ है, उसके प्रतीक के रूप में बड़े-बड़े मन्दिरों का निर्माण हुआ है। प्रवेश-द्वार से ले कर परम पावन मन्दिर-गर्भ तक मन्दिरों का निर्माण क्रम से इस प्रकार हुआ है मानो वे विराट् के विभिन्न अंगों का प्रतिनिधित्व कर रहे हों। इस प्रकार मन्दिर-निर्माण की कला तथा मन्दिर में की जाने वाली उपासना के कर्मकाण्ड में आत्म-साक्षात्कार के परम लक्ष्य का पुट परिलक्षित होता है।

समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना करने हेतु कर्मकाण्ड महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नैतिकता का एक आवश्यक तत्त्व आत्म-संयम धर्माचरण का एक अपरिहार्य अंग है। धर्म की एक अवस्था के रूप में कर्मकाण्ड विभिन्न प्रकार के अनुशासनों, व्रतों, अनुष्ठानों तथा नियमों का पालन करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। ये नियम-व्रत आदि मानव-स्वभाव के निम्नस्तरीय आवेगोंह्वह्वप्रवृत्तियों का निरोध करते हैं। बहुरूपी कर्मकाण्ड से सम्बन्धित आचरण के कुछ उदाहरण ये हैंह्वह्वउचित समय पर नित्य स्नान, व्रत, रात्रि-जागरण, पवित्र तथा साफ वातावरण में तैयार किये हुए तथा भगवान् को समर्पित भोजन का सेवन। कर्मकाण्ड सम्पन्न करते समय सम्बन्धित व्यक्ति शरीर, मन और वाणी से सभी प्रकार की अपवित्र वस्तुओं से दूर रहने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार उनके शारीरिक स्वास्थ्य तथा विचारों की उत्कृष्टता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है तथा आध्यात्मिक उपस्थिति की भावना में वे विभोर रहते हैं।

मानव-मन पर कर्मकाण्ड का सबसे अधिक प्रभाव यह पड़ता है कि उसमें आध्यात्मिक चैतन्य की भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। कर्मकाण्ड लक्ष्य नहीं है। धर्म के विभिन्न रूपों से भिन्न धार्मिक चेतना की उपलब्धि का यह संकेतक है। कर्मकाण्ड का उद्देश्य इसी चेतना को उत्पन्न करता है। यदि ऐसा नहीं कर पाता तो यह निरुद्देश्य सिद्ध होता है।

कर्मकाण्डों का विधान इस प्रकार किया गया है कि उन्हें सम्पन्न करने से मन अपनी क्षमताओं को प्रकट करने लग जाता है। जिस प्रकार उचित उपकरणों का प्रयोग करने से निधि (खजाना) प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार कर्मकाण्डह्वह्वजो मन का मनोरंजन करता है और निरोध भीह्वह्वकी सहायता से जब मन पर जमा हुआ मैल हटा दिया जाता है, तब (मन के) नीचे छिपी हुई दिव्य उपस्थिति की

निधि धीरे-धीरे प्रकट होने लगती है। पूजा के कर्मकाण्ड में इष्टदेव की मूर्ति (जिसमें भक्त पूजा-स्थल पर पवित्रता और मनोहरता का वातावरण उत्पन्न करते हुए साक्षात् ईश्वर को ही देखता है), मूर्ति के सामने जलते हुए दीपकों का स्निग्ध प्रकाश, अगरबत्तियों-लोबान आदि की सुगन्धि का शान्त प्रभाव मन और संवेदनाओं को उद्दीप्त करके उन्हें एकीकरण, संघटन तथा विभ्रान्त कर देने वाली विविधता से मुक्त स्वतन्त्रता से सम्बन्धित अन्तःप्रवाही विचारों को ग्रहण करने योग्य बना लेते हैं।

सर्वव्यापक परम सत्ता की उपस्थिति की चेतना उत्पन्न करने हेतु कर्मकाण्ड विविध प्रकार की तकनीकें हैं। यज्ञ की विशद क्रियाओं को सम्पन्न करते हुए गम्भीरता का वातावरण तो उत्पन्न होता ही है, साथ ही इस बात की भी अनुभूति होने लगती है कि जो-कुछ क्रिया सम्पन्न की जा रही है, वह अत्यन्त वास्तविक है। मन को यज्ञ की व्यापक प्रक्रियाओं में लीन करना पड़ता है, इसलिए यज्ञेतर विचारों के लिए कोई स्थान ही नहीं रहता। परिणाम-स्वरूप मन एकाग्रता की स्थिति में संस्थित हो जाता है।

प्रत्येक काल में प्रत्येक व्यक्ति के लिए कर्मकाण्ड एक-समान नहीं रहते। जीवन की किस अवस्था में हम हैं, समाज के किस वर्ग के हम सदस्य हैं, किन परिस्थितियों में कर्मकाण्ड सम्पन्न कर रहे हैं, कर्मकाण्ड सम्पन्न करने का उद्देश्य, समय और स्थान क्या हैह्नह्नइन बातों से कर्मकाण्ड का स्वरूप निर्धारित होता है। इस प्रकार कर्मकाण्ड सापेक्ष सत्य है, निरपेक्ष सत्य नहीं। स्मृतिग्रन्थों, इतिहासों और पुराणों में इन सबका विस्तार से वर्णन किया गया है। **(अनूदित)**

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

शिवानन्द-विजय १

श्री सुन्दरश्याम 'मुकुट'

इस नाटक का उद्देश्य प्रेरणा देना, निर्देशन देना तथा उन्नत करना है। हमें इस बात में किंचित् भी सन्देह नहीं है कि उद्देश्य की सफलतापूर्वक पूर्ति करने के सभी तत्त्व इस नाटक में निहित हैं। दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध शैव सन्त अप्पय्य दीक्षितार, संसार में व्याप्त कष्टों एवं क्लेशों से अत्यधिक व्यथित हो कर भगवान् को सहायतार्थ पुकारते हैं। भगवान् शिव उनको वचन देते हैं कि मानव-जाति को अपने जीवन के उदात्त लक्ष्य के प्रति जागरूक करने तथा उनके आध्यात्मिक विकास को गति प्रदान करने के लिए वे स्वयं अवतरित होंगे। अठारह पीढ़ियों के बाद, कुप्पुस्वामि (इस नाटक के नायक स्वामी शिवानन्द) का जन्म उद्धारक एवं मुक्तिदाता के अवतरण का प्रमाण है। अपने पूर्व-निर्धारित लक्ष्य के प्रति निजी चेतना द्वारा प्रेरित हो कर डा. कुप्पुस्वामि अपने वैभवशाली जीवन को त्याग कर संन्यास-धर्म अपना लेते हैं तथा गहन परिश्रमपूर्वक विश्वव्यापी जागरूकता, प्रेरणा एवं आध्यात्मीकरण हेतु जुट जाते हैं तथा सफलता प्राप्त करते हैं। शताब्दियों पूर्व सन्त अप्पय्य दीक्षितार को भगवान् द्वारा दिये गये वचन की परिपूर्णता आधुनिक जगत् को उनमें स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है।

इस आधुनिक सन्त के उदात्त त्याग एवं विश्व-सेवा की प्रेरणाप्रद कथा को इस रचना द्वारा आकर्षक एवं रुचिकर नाटक के रूप में प्रस्तुत करने का हमने गहन प्रयास किया है।

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थानह्वह्वतिरुपति के विष्णु मन्दिर का द्वार

समयह्वह्वप्रभात

(नेपथ्य से, मन्दिर के आरती-गान की मधुर ध्वनि आ रही है। साथ ही झाँझ, करताल की झनक, घण्टे-घड़ियालों की ठनक और मृदंग की खड़क से कोलाहल सुनायी दे रहा है।)

(गान)

जग के पालन हार।
अपने जन को भव-सागर से
कर देते हो पार।।

प्रभो शरण में जो आता है,
वह मन वांछित फल पाता है,
कौन नहीं फिर गुण गाता है,
देख तुम्हें आधार।
जग के पालन हार।।

खड़े हुए हैं सब नर नारी,
दिखलाओ हे कृष्ण मुरारी,
अपनी वह बांकी छवि प्यारी,
जाते हैं बलिहार।
जग के पालन हार।।

टूट चुकी पतवार हमारी,
तूफ़ानों का डर है भारी,
केवट बन आओ गिरधारी,
नैया है मंझधार।
जग के पालनहार।।

(गान धीरे-धीरे बन्द होता है।)

(अप्पय्य दीक्षित का प्रवेश। उनके मस्तक पर शैवी तिलक और गले में रुद्राक्ष की माला है। चेहरे पर कान्ति और गम्भीरता है।)

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वऐं! आरती हो चुकी! क्या मुझे देर हो गयी! अच्छा दर्शन तो मिल ही जायेंगे!

(नेपथ्य से)ह्वह्वकहाँ घुसे जाते हो?

एक वैष्णवह्वह्व(आ कर) महाराज यह शिव मन्दिर नहीं, विष्णु मन्दिर है। समझे?

दूसरा वैष्णवह्वह्व(आ कर) कहीं राह तो नहीं भूल गये?

तीसरा वैष्णवह्वह्व(आ कर) यहाँ शैवों का कोई काम नहीं।

चौथा वैष्णवह्वह्व(आ कर) चुपके-चुपके पीछे लौट जाइए।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्व(चौंक कर) यह तो भगवान् का मन्दिर है, दर्शन कर आने दो! रोकते क्यों हो?

पहला वैष्णवह्वह्वक्या कहा? (दूसरे वैष्णवों से) सुन लिया सब ने!

दूसरा वैष्णवह्वह्वसुन क्या लिया, दर्शन थोड़े ही हो सकते हैं।

तीसरा वैष्णवह्वह्वभैया! इन्हें किसी शिव-मन्दिर का मार्ग बता दो। बेचारे चले जायेंगे।

चौथा वैष्णवह्वह्वऊँह, तुम्हीं न बता दो यहाँ किसी की बेगार थोड़ी ही करनी है।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वतुम लोगों की इसमें हानि क्या है? केवल दर्शन ही करने हैं।

पहला वैष्णवह्वह्वतो क्या भगवान् के गले से कण्ठा उतारने की इच्छा होती? महाराज शैवों के प्रवेश मात्र से मन्दिर भ्रष्ट हो जाता है।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वक्यों शैव इतने घृणित होते हैं?

दूसरा वैष्णवह्वह्वघृणित नहीं तो क्या पूजने के योग्य होते हैं? ऊँह, कहाँ विष्णु कहाँ शिव! (मुँह बनाता है)

तीसरा वैष्णवह्वह्वएक सौन्दर्य का भण्डार, दूसरा भस्मी रमाने वाला औघड़ बाबा।

चौथा वैष्णवह्वह्वभूतों का मित्र, सर्पों का खिलाने वाला सपेरा।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्व(घबरा कर) इस प्रकार भगवान् की निन्दा न करो।

चौथा वैष्णवह्वह्वक्यों न करें, हम किसी से डरते थोड़े ही हैं।

पहला वैष्णवह्वह्वडरें क्यों, हमें गहरी छाननी है।

दूसरा वैष्णवह्वह्वअजी विष पीना हो तो आप ही पियें, यहाँ अमृत के प्याले गटकते हैं।

पहला वैष्णवह्वह्वडमरू की डमडम क्या वंशी-स्वर से समानता कर सकती है?

तीसरा वैष्णवह्वह्वऔर सुदर्शन चक्र के सामने त्रिशूल भी कोई अस्त्र है?

पहला वैष्णवह्वह्वगुरु देवता! उल्टे पाँव ही लौट जाइए, दर्शन नहीं मिलेंगे। ऐसी आज्ञा है।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वतुम लोगों को यह आज्ञा किसने दी?

दूसरा वैष्णवह्वह्वहमारे शास्त्री जी ने।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वआपके शास्त्री जी कौन हैं?

तीसरा वैष्णवह्वह्वइस मन्दिर के महन्त और कौन।

चौथा वैष्णवह्वह्वबड़े क्रोधी हैं, उनके क्रोध से तो तीनों लोक काँपते हैं।

पहला वैष्णवह्वह्वकहीं ऐसा न हो कि आप ही उनके क्रोध के ग्रास बन जायें।

दूसरा वैष्णवह्वह्वइसलिए महाराज अपनी इच्छा को अन्दर ही छुपाये सिर पर पाँव रख कर भाग जाइए।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्व(दृढ़ता के स्वर में) मैं दर्शन करके ही जाऊँगा। (बैठ जाते हैं)

पहला वैष्णवह्वह्वअच्छा तो देवता यहीं जम गये।

दूसरा वैष्णवह्वह्वशास्त्री जी को बुलाऊँ?

तीसरा वैष्णवह्वह्वहाँ भैया! उन्हीं को बुलाओ। वे ही इनके सिर अपना डण्डा फिरायेंगे।

चौथा वैष्णवह्वह्वअह-ह-ह (भय का प्रदर्शन) डण्डे का नाम न लेना, मेरे तो प्राण निकल जायेंगे। कितना मोटा, यदि लग जाये तो जीभ बाहर की कुदक पड़े।

दूसरा वैष्णवह्वह्वमैं अभी बुला लाता हूँ। (जाने को तैयार होता है)

तीसरा वैष्णवह्वह्व(सामने देख कर), अरे, वे तो इधर ही आ रहे हैं।

चौथा वैष्णवह्वह्वबस एक...दो...तीन, अब मालूम पड़ेगा आटे-दाल का भाव।

(शास्त्री जी का प्रवेश। मस्तक पर वैष्णवी तिलक, गले में स्वर्ण जटित कंठी और बदन पर रेशमी पीताम्बर पहने हुए हैं। रौबदार चेहरा, हृष्ट-पुष्ट शरीर और सिर पर बँधी हुई लम्बी-चौड़ी चोटी है। हाथ में चमकता हुआ चाँदी की मूठ का मोटा डण्डा है। पाँव में खूँटीदार खड़ाऊँ है।)

शास्त्रीह्वह्वपुत्रो, यहाँ क्यों खड़े हो? प्रसाद ले चुके?

चारों वैष्णवह्वह्व(प्रणाम करके) हाँ गुरुदेव! ले चुके।

पहला वैष्णवह्वह्वयह शैव मन्दिर में घुस आया।

शास्त्रीह्वह्व(अप्पय्य दीक्षित को देख कर) नारायण! नारायण!! अरे, यह यहाँ कैसे आ गया?

दूसरा वैष्णवह्वह्वहमें नहीं मालूम गुरुदेव! जब हम प्रसाद ले कर आ रहे थे, तो इसे अन्दर जाते हुए पाया।

तीसरा वैष्णवह्वह्वऔर ऐसा जम कर बैठ गया कि कहने-सुनने की जरा भी परवाह नहीं करता।

चौथा वैष्णवह्वह्वअब आपको ही बुलाने जा रहे थे, महाराज!

शास्त्रीह्वह्वसावधान, शैव! मन्दिर में घुसने का नाम न लेना। यह द्वार है, जा सकते हो।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्व(प्रणाम करके) दर्शन करके जाऊँगा महाराज! आज्ञा दीजिए।

शास्त्रीह्वह्व(वक्र दृष्टि) दर्शन, तुम्हें। (हँस कर) असम्भव।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वक्या कारण है? भगवन्?

शास्त्रीह्वह्वकारण? ऊँह यह बताने की क्या आवश्यकता? दर्शन नहीं होंगे (कड़े स्वर में) यही मेरी आज्ञा है।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वभगवान् के मन्दिर में भी आज्ञा, यह आप क्या कह रहे हैं महाराज!

शास्त्रीह्वह्वतुम बढ़ते ही जाते हो (क्रोध के स्वर से) सीमा में रहो। (वैष्णवों से) निकालो इसे इसी समय। नारायण, नारायण, नारायण। (तेजी से प्रस्थान)

पहला वैष्णवह्वह्व(अप्पय्य दीक्षित से) समझ गये! हमें क्या आज्ञा मिली है?

दूसरा वैष्णवह्वह्वकहिए महाशय, अब तुम्हें किस प्रकार निकाला जाये?

तीसरा वैष्णवह्वह्वघसीट कर, और कैसे?

चौथा वैष्णवह्वह्वनहीं, नहीं, ऐसा करो, एक टाँग पकड़े और दूसरा हाथ।

पहला वैष्णवह्वह्वयूँ भी नहीं (सोचता है) इसकी नाक पकड़ कर खींची जाए।

दूसरा वैष्णवह्वह्वहाँ, हाँ, यही ठीक है। पर इसकी नाक पकड़ेगा कौन? मैं तो पकड़ने का नहीं, यदि नाक मेरे हाथ में रह कर टूट गयी तो बड़ा भारी प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।

तीसरा वैष्णवह्वह्वकोई न पकड़े, मैं ही पकड़ लूँगा, पर...

(धमाका होता है। पर्दा बीच में से फट कर दो भागों में विभक्त हो जाता है। मन्दिर में विष्णुमूर्ति शिवमूर्ति में परिवर्तित होती हुई दिखलायी देती है। चारों वैष्णव भय के मारे काँपने लगते हैं और भाग जाते हैं। अप्पय्य दीक्षित शिवमूर्ति के समक्ष जा कर विह्वलता से स्तुति करने लगते हैं।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्व

शम्भो महादेव देव, शिव शम्भो महादेव
देवेश शम्भो, शम्भो महादेव देव।

फालावनम्रत्किरीटं, फालनेत्रार्चिषा दग्धपंचेषु कीटम्।
शूलाहतारातिकूटं, शुद्धमर्धेन्दु चूडं भजे मार्गबन्धुम्।। शम्भो.

अंगे विराजद्भुजंगं अभ्रगंगातरंगाभिरामोत्तमांगम्।
शृंगार वाटी कुरंगं सिद्धसंसेवितांघ्रि भजे मार्गबन्धुम्।। शम्भो.

नित्यं चिदानन्दरूपं, निहनुताशेषलोकेशवैरिप्रतापम्।
कार्तस्वरागेन्द्र चापं, कृत्तिवासं भजे दिव्य
सन्मार्गबन्धुम्। शम्भो.

कन्दर्प दर्पघ्नमीशं, कालकण्ठं महेशं महाव्योमकेशम्।
कुन्दाभदन्तं सुरेशं, कोटिसूर्यप्रकाशं भजे
मार्गबन्धुम्।। शम्भो.

मन्दारभूतेरुदारं, मन्दरागेन्द्रसारं महागौर्यदूरम्।
सिन्धूदूर प्रचारं, सिन्धुराजातिधीरं भजे मार्गबन्धुम्।। शम्भो.

(अप्पय्य दीक्षित भावावेश में मूर्ति के चरण पकड़ते हैं। उसी समय दिव्य प्रकाश फैल जाता है। शिव साक्षात् प्रकट हो जाते हैं और धीरे-धीरे डमरू का स्वर करने लगते हैं।)

शिवह्वह्वभक्त अप्पय्य! हम तुझ से प्रसन्न हुए, वर माँग।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्व(गद्गद कण्ठ से) उमानाथ आपकी जय हो! आज मुझे सब-कुछ मिल गया। मैं और क्या माँगू भगवन्! अपनी भक्ति दीजिए।

शिवह्वह्ववह तो पहले ही दे चुके, और कुछ माँग।

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वप्रभो...

शिवह्वह्व(कृपा दृष्टि)

अप्पय्य दीक्षितह्वह्वलोकेश! संसार के सभी प्राणी दुःखी दिखलायी देते हैं, उन पर दया कीजिए। (सिर झुका लेते हैं)

शिवह्वह्व(मुस्कराते हुए) मैं तेरा अभिप्राय समझा, धैर्य रख। तेरी इच्छा पूर्ण होगी। सुन, संसार को दुःख से छुड़ाने के लिए तेरी अठारहवीं पीढ़ी में एक पुरुष जन्म लेगा जो शिवानन्द के नाम से प्रसिद्ध हो कर ज्ञान, कर्म, भक्ति के द्वारा सच्चे और स्थायी सुख का पथ-प्रदर्शन करेगा, उसमें मेरा ही तेज रहेगा।

(शिव का अन्तर्धान होना शास्त्री जी का अपने शिष्य वैष्णवों के साथ प्रवेश। वे शिवमूर्ति को देख कर भौंचक्के से रह जाते हैं और अप्पय्य दीक्षित के चरण पकड़ लेते हैं।)

शास्त्रीह्वह्व(घबराते हुए) मुझे क्षमा कीजिए भक्तराज! मैंने अनजाने में आपका अपमान कर दिया। मुझे अज्ञान ने अन्धा बना रखा था, आज मेरी आँखें खुल गयी हैं। मेरी रक्षा...

अप्पय्य दीक्षितह्वह्व(उठाते हुए) यह आप क्या कर रहे हैं महाराज! मैं तो आपका सेवक हूँ। आपने कोई अपमान नहीं किया, फिर क्षमा कैसी! भेद-भाव को दूर करने के लिए विष्णु ने शंकर-रूप में अवतार लिया है। देखिए! वे कितने प्रसन्न हैं (मूर्ति की ओर संकेत)। आओ, हम सब मिल कर प्रभु के गुण गायें।

(सब गाते हैं)

(गान)

जय शिव भोले भण्डारी।
हे आशुतोष हे त्रिपुरारी।।

पतितों को पावन करते हो,
सुख दे कर दुःख को हरते हो
शरणागत हैं आज तुम्हारी।
मेटो सारे संकट भारी।।

जटा-जूट में गंग बिराजे,
शेष नाग की माला साजे,
एक हाथ में शूल लिये हो,
एक हाथ में डमरू धारी।।

उमा रमण करुणा के सागर,
नाव भँवर में है यह जर्जर,
पार लगा दो आ कर अब तुम,
बिगड़ गयी है दशा हमारी।।

(सब भगवान् के चरणों में शीश झुकाते हैं। धमाका होता है और शिवमूर्ति पुनः विष्णुमूर्ति में परिवर्तित होती हुई दृष्टिगोचर होती है।)

(पट-परिवर्तन)

(क्रमशः)

ऐसे करते थे गुरुदेव

सायंकाल के लगभग ४ बजे का समय था। शिवानन्द जनरल हॉस्पिटल में स्ट्रेचर के ऊपर एक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले युवक को लाया गया। स्ट्रेचर वाला व्यक्ति बुरी तरह से घायल था। उसका चेहरा रक्त से भरा हुआ था और अत्यधिक सूजन से युक्त था। उसके साथ दो पुलिस कर्मचारी तथा थोड़ी-सी भीड़ थी।

पुलिस कर्मचारी चिकित्सक के सम्बन्ध में पूछ रहे थे। थोड़ी देर बाद चिकित्सक आ गया और रोगी की जाँच करने लगा, प्राथमिक चिकित्सा के उपरान्त घावों की मरहमपट्टी कर दी गयी। वह पूर्णतया अचेतावस्था में था।

अब पुलिस कर्मचारी ने उसके सम्बन्ध में बताना आरम्भ किया : ''इसका नाम श्री...है, यह डाकू है। यह सड़क के किनारे के वृक्षों की शाखाओं में छिप कर बैठ जाता और राहगीरों की प्रतीक्षा करता। स्त्री, पुरुष, बूढ़ा, युवकह्वह्वजो भी अकेला होता, यह उसके ऊपर कूद जाता, उसे डरा-धमका कर जो-कुछ भी नकदी अथवा आभूषण इत्यादि होते, उनसे निकलवा लेता। यही इसका नियमित धन्धा है। क्या हुआ, कि कल भी इसने वहाँ से गुजरने वाले अधेड़ आयु के ग्रामीण व्यक्ति के साथ ऐसा ही किया। वह व्यक्ति न जाने कैसे बच निकला और पुनः अपने साथ तीन साथियों को ले कर इस पर आक्रमण करने के लिए लौट आया। किन्तु वृक्ष पर चढ़े हुए इस डाकू ने उन पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिये और ये लोग भाग खड़े हुए। इन्होंने पुलिस को सूचना दे दी। तब कुछेक पुलिस कर्मचारी तथा गाँववासियों ने एकत्रित हो कर इसे घेरना शुरू कर दिया। वह डाकू किसी-न-किसी प्रकार भाग निकला और ये सब लोग भी दोनों दिशाओं से इसके पीछे भागे। यह भाग कर भी बच न सका; क्योंकि दुर्भाग्यवश सड़क के किनारे के एक लगभग बीस फुट गहरे गड्ढे में जा गिरा। इसके छह दाँत उखड़ गये तथा शरीर पर बहुत अधिक चोटें लगीं। तब गाँव-वासी गड्ढे में उतरे और इसको बाहर निकाल कर लाये। जब तक सब इसे ले कर चिकित्सालय पहुँचे, यह बेसुध हो चुका था।''

पुलिस कर्मचारी ने कहानी समाप्त की और कौतूहल-प्रेमियों की भीड़ भी बिखरने लगी। शीघ्र ही समाचार सब ओर फैल गया और डाकू प्रदर्शनी की वस्तु बन गया। प्रत्येक व्यक्ति आता, उसे देखता, कुछ उस पर दया दिखाते; कुछ डाँटते हुए कहते कि उसे ऐसा ही दण्ड मिलना चाहिए थाह्वह्वऔर उस घायल अचेत व्यक्ति के ऊपर छींटे कसते हुए, गपशप करके चल देते।

रात के ८ बज गये थे। स्वामी जी (परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज) अपने कुटीर से निकले और सत्संग भवन की ओर आगे बढ़े। डाकू का समाचार स्वामी जी को बताया गया। स्वामी जी ने चलते-चलते शान्तिपूर्वक सारी बात सुनी। रास्ते में चिकित्सालय आते ही वे उस वार्ड में प्रविष्ट हुए जहाँ घायल रोगी पड़ा था। स्वामी जी उसके निकट आये और कुछ क्षण खड़े रहे। वहाँ खड़ा प्रत्येक व्यक्ति स्वामी जी की प्रतिक्रिया और उनका कथन देखने-सुनने को उत्सुक था। स्वामी जी कुछ देर शान्त खड़े रहे।

''आओ, हम इस व्यक्ति के स्वास्थ्य और उसमें शीघ्र सुधार के लिए महामृत्युंजयमन्त्रोच्चारण करें, **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे...**''

मन्त्रोच्चारण पूर्ण होते ही स्वामी जी ने किसी को अपने कुटीर में से बिस्कुट का डिब्बा ले कर आने को कहा। बिस्कुट का डिब्बा ला कर खोला गया। स्वामी जी ने उसके निकट डिब्बा रखते हुए कहा, ''नारायण भगवान् इस रूप में आये हैं। कृपया प्रातः इसे चाय या दूध के साथ बिस्कुट दें।'' इस प्रकार कहते हुए वे शान्तचित्त आगे चल पड़े।

एक प्रशान्त मौन वहाँ व्याप्त हो गया। स्वामी जी की

ओर निहारते हुए भक्तों के हृदय में एक प्रकार का चिन्तन चल रहा था।

''क्या स्वामी जी यीशु का पुनरवतरण हैं?''

''क्या स्वामी जी बुद्ध का पुनर्प्रकटीकरण हैं?''

''स्वामी जी क्या तुलसीदास या कबीर हैं?

''क्या स्वामी जी गुरुनानक हैं अथवा कौन हैं ये?''

पूर्व और पश्चिम के भक्त, जो स्वामी जी के साथ आ रहे थे, सभी की उत्सुक जिज्ञासु दृष्टियों में ऐसे ही प्रश्न छिपे थे।

''बोल सद्गुरु महाराज की जय!'' इस ध्वनि ने भक्तों को उनकी चिन्तनपूर्ण मनःस्थिति से वापस निकाला। केवल तभी उन्हें पता चला कि वे सत्संग हाल पहुँच चुके हैं।

ऊपर वर्णित घटना के विषय में यदि किसी व्याख्या अथवा टिप्पणी की आवश्यकता हो, तो वह यह है कि स्वामी जी का दृष्टिकोण एक परिपूर्णता का है, जो समस्त नाम और रूपों की, गुण और चरित्र की बाधाओं को भेदता हुआ प्राणी मात्र में केवल उस एक सत्ता को देखता है। हमें चोर दिखायी देने वाला भी उनकी दृष्टि में नारायण है।

यह परिपूर्णता का दृष्टिकोण है, यह सन्त का दृष्टिकोण है, यह शिवानन्द का दृष्टिकोण है!

वृन्दावन के वंशीवाले का कथन है :

''विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।''

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

'अनेकों' के मध्य उसी 'एक' को देखें

सत्य शाश्वत और अनन्त है। वह सर्वदा और सर्वव्यापक है। अतः सभी स्थान पवित्र हैं। अद्वितीय और एकमात्र केवल वही होने के कारण, उनके अतिरिक्त अन्य कुछ और हो ही नहीं सकता। इसलिए जिनको हम उनसे पृथक् मानते हैं और ऐसा मानते हुए अपने मन को उन सबसे परे हटाते हैं, वह इसलिए ऐसा करते हैं; क्योंकि उन्हें देखने में विवेक का और सही दृष्टि का अभाव रहता है। वस्तुओं को देखने में गलती नहीं है; किन्तु जिस ढंग से हम उन्हें देखते हैं, उस ढंग में गलती है। वस्तुस्थितियों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता, वह तो इसी प्रकार रहेंगी और सौभाग्य से उन्हें परिवर्तित होने की आवश्यकता भी नहीं है; क्योंकि वे जैसी हैं, उसमें कुछ भी गलत नहीं है। हमें परिवर्तित होना होगा। हमें अपनी दृष्टि परिवर्तित करके उसे कुछ ऐसे मानसिक भावनात्मक मनोवृत्तियों से भरना होगा जहाँ सब वस्तुओं को हम ऐसी आध्यात्मिक दृष्टि से, जाग्रत दिव्य जागरूकता से देखें जो वास्तविकता के ज्ञान पर आधारित हो।

सब वस्तुओं का अस्तित्व है। उनमें उनके अस्तित्व के रूप में 'वह' स्वयं विद्यमान हैं। सब वस्तुएँ चेतन हैं। यद्यपि उनमें चेतना के प्रकटीकरण की मात्रा में अन्तर हो सकता है, तथापि उन सबमें शुद्ध चैतन्य के रूप में 'उन्हीं' की सत्ता है। सभी वस्तुओं में स्वयं में आनन्द-वृष्टि करने की क्षमता निहित है। 'वे' उन सबमें आनन्द-प्रदाता तत्त्व के रूप में विद्यमान हैं। इसलिए इन सब स्थूल नाम-रूपों के पीछे और परे केवल वही सच्चिदानन्दब्रह्मसत्-चित्-आनन्द समस्त विश्व में व्याप्त है। केवल सत्-चित्-आनन्द ही शाश्वत अपरिवर्तनशील, अविनाशी है, अतः केवल सत्-चित्-आनन्द ही वास्तविक है। नाम-रूप वास्तविक नहीं हो सकते; क्योंकि वे नश्वर और क्षणिक हैं।

अतः वास्तविक को अवास्तविक कैसे छिपा सकता है? यह निरर्थक है। इस पर मनन करें। केवल तभी आप जानेंगे कि समस्त वस्तुओं को किस ढंग से देखना है। तब कोई बाधाएँ नहीं रहेंगी; क्योंकि हम परिवर्तित हो चुके होंगे। संसार भले ही वही रहेगा; किन्तु हम बदल गये होंगे। हम भगवान् को यहाँ ही और अब ही देखेंगे। वह तथ्य होगा कल्पना नहीं, 'अनेकों' के मध्य हम उसी 'एक' को देखेंगे।

स्वामी चिदानन्द

सद्गुरुदेव के दिव्य उपकरण का हीरक जयन्ती उत्सव

''मेरा जीवन सेवा के लिए है। आप सबको प्रसन्न रखने के लिए ही मैं जीता हूँ, अज्ञान को नष्ट करके परम लक्ष्य कैवल्य, परम आनन्द की प्राप्ति में आप सबकी सहायता करने के लिए ही मैं जीवित हूँ।''
(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।।

हे परन्तप अर्जुन! द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान-यज्ञ अत्यन्त श्रेष्ठ है तथा यावन्मात्र सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता के इस उदात्त कथन को मन में लिये हुए तथा आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार द्वारा मानवता की सेवा की अत्यधिक उमंग एवं उत्साहपूर्ण हृदय से सद्गुरुदेव ने २० सितम्बर १९५१ को योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी प्रेस की स्थापना की । उन्होंने ज्ञान-दान को सर्वोच्च दान माना। इस विषय में उन्होंने मुद्रणालय को मंच से अधिक महत्त्वपूर्ण समझा। जो-कुछ हम सुनते हैं, वह हो सकता है कि एक-दो दिनों में विस्मृत हो जाये; किन्तु लिखित ज्ञान का लाभ दीर्घ काल तक रहेगा। इस कार्य को वे इतना महत्त्व देते थे कि जब आश्रम वित्तीय संकट से गुजर रहा था, उस समय वे रसोईघर को बन्द करने को तो तैयार थे, किन्तु मुद्रणालय को नहीं, ''हम सब अन्य क्षेत्रों में जा कर भिक्षा पर निर्वाह कर सकते हैं, किन्तु ज्ञान-यज्ञ निश्चित रूप से चलता रहना चाहिए,'' ऐसा वे प्रायः कहा करते थे।

मुद्रणालय जब से संस्थापित हुआ है, तभी से यह समस्त विश्व में अत्यधिक अपेक्षित आध्यात्मिक जागरूकता लाने वाले सद्गुरुदेव के दिव्य सन्देशों के प्रसारार्थ कार्य करने में दिन-रात संलग्न है। इसने मानवता को योग, भक्ति, वेदान्त तथा नैतिकता इत्यादि अनेकों विषयों पर गुरुदेव की पुस्तकों की अनमोल निधि प्रदान की है। इस (मुद्रणालय) ने विश्व के हर एक मानव को जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति की क्रियात्मक साधना सुलभ करा दी है। यह अनुमान कर पाना मानव की शक्ति से परे है कि कितनी जिज्ञासु आत्माओं ने सद्गुरुदेव के आध्यात्मिक उपदेशों एवं उदात्त शिक्षाओं के द्वारा आनन्दामृत की घूँटों का रसपान किया है।

परम पिता की अपार कृपा से सद्गुरुदेव के इस दिव्योपकरण ने २० सितम्बर २०११ को मानवता की महान् सेवा में ६० वर्ष पूर्ण किये। हीरक जयन्ती का यह शुभ दिवस मुख्यालय में अत्यन्त समुचित ढंग से मनाया गया। प्रातः सद्गुरुदेव के समाधि मन्दिर में पावन पादुकाओं की विशेष पूजा की गयी। उसके उपरान्त मुद्रणालय की सभी मशीनों की विधिवत् श्रद्धा सहित पूजा की गयी। तत्पश्चात् समाधि हाल में विशेष सत्संग आयोजित किया गया जिसमें परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने अपने संक्षिप्त प्रवचनों द्वारा सद्गुरुदेव द्वारा शुभारम्भ किये गये ज्ञान-यज्ञ की महिमा का वर्णन किया। मुद्रणालय के सभी कर्मचारियों तथा साधकों को सम्मानित किये जाने के साथ ही कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

परम पिता परमात्मा का आशीर्वाद मुद्रणालय पर इसी प्रकार बना रहे और यह मानवता की महिमामयी सेवा में निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता हुआ गुरुदेव के दिव्य लक्ष्य की पूर्ति द्वारा उन्हें आनन्द प्रदान करता रहे। □ □ □

शाश्वत सत्य*

डा. ऑस्कर सी. फॉस (पी-एच. डी., डी. लिट.)

जब सिसरो ने अपनी लेखनी द्वारा 'युद्ध अथवा शान्ति' की समस्या का विषय उठाते हुए ऐटिकस को लिखाद्वद्व''मैं अत्यधिक 'अन्यायपूर्ण शान्ति' को 'सर्वाधिक न्यायपूर्ण युद्ध' की तुलना में अच्छा समझता हूँ,'' तब यह उसने अपने विक्षुब्ध समय के युद्ध से क्लान्त अधिकांश लोगों की वास्तविक इच्छा को देखते हुए कहा। किन्तु यह महान् रोमन वक्ता उन उपायों को सुझाने में असफल रहा जिनके द्वारा मानव-जाति के अभिशापद्वद्व'युद्ध' को सफलतापूर्वक दूर हटाया जा सके।

श्री स्वामी शिवानन्द जी ने हमें वह उपाय बताये। उनकी युद्ध और शान्ति की परिभाषाएँ शाश्वत सत्य हैं, यह इतने शुद्ध एवं उज्ज्वल हैं, जितना उपनिषदों में निहित ज्ञान।

जब आनन्द कुटीर के सन्त ने मुझे लिखा, तब वे हम मध्य यूरोप के रहने वालों की दुर्दशा को समझे थे; यद्यपि वे सुदूर 'श्रद्धेय प्रेरणाप्रद हिमालय' के देश में रहते थे, तथापि हमारी समस्याओं के सम्बन्ध में उन्होंने ऐसे लिखा मानो जीवन-भर वे हमारे साथ यूरोप में ही रहे हों। अपने शब्दों में उन्होंने अपना सम्पूर्ण हृदय ही मानो हमारे लिए उँडेल दिया था; और उसे पढ़ते हुए मुझे आभास हुआ कि ये शब्द जिसने कहे हैं, उसके लिए देश और काल की सीमा के बन्धनों का कोई अस्तित्व नहीं है।

यह कहते समय कितने अद्भुत रूप में उन्होंने हमारी दशा और हमारी व्याधि को परिभाषित किया है :

''सत्य का सच्चा जिज्ञासु निराश होना नहीं जानता।''

''भगवान् में विश्वास रखते हुए आओ हम उठें और जैसा भी जीवन है, उसका सामना करना सीखें और इस स्व-निर्मित कारावास से दूर निकलने के लिए संघर्ष करें। जिन दुर्बलताओं और क्रूरताओं का आज यूरोप दोषी है, वह इतिहास में सदा ही सभी राष्ट्रों को कभी-न-कभी झेलना पड़ा है। इनका इलाज नहीं हो सकता भले ही कितने भी आन्दोलन, क्रान्तियाँ हों अथवा संस्थाएँ बनायी जायें। कोई भी महान् व्यक्ति, कोई भी उद्घोषणा, कोई संविधान एक रात में शान्ति, सामंजस्यता अथवा समृद्धि नहीं ला सकता। विश्व-उद्धार व्यक्तिगत उद्धार पर निर्भर करता है; व्यक्तिगत परिपूर्णता द्वारा ही विश्व-परिपूर्णता प्राप्त हो सकती है। स्वयं का परिष्कार कर लें, तो आपने विश्व का परिष्कार कर दिया।''

''केवल यीशुओं की पीढ़ी, बुद्धों की पीढ़ी, विवेकानन्दों की पीढ़ी ही विश्व-परिपूर्णता का सपना सच कर सकती है और महामानवों द्वारा इस प्रकार का परिष्कृत-परिपूर्ण विश्व सम्भव है। और यह वर्तमान घोर यन्त्रणादायी क्रूरताएँ, उदित होने वाले प्रभात के पूर्व का गहन अन्धकार हैं। यह एक आवश्यक प्रशिक्षण है, जिसमें आगे की पीढ़ियों का सफल होना अनिवार्य है ताकि वे अपने प्रयासों की व्यर्थता को समझें, अपनी सफलताओं की सारहीनता को जानें, अपनी उपलब्धियों की सीमितताओं को और अपनी सफलताओं के पीछे छिपे दुःखों को समझें।''

''इतिहास के ऐसे वीभत्स समयों के द्वारा हम पर किये जाने वाले चाबुक के प्रहारों में भी उस दयानिधान प्रभु की अथाह करुणा की ही अभिव्यक्ति है। यदि हमें रुलाया जा रहा है, तो वह इसलिए है कि हमारे भीतर का पशुत्व ऐसी कष्टदायी शल्यक्रिया द्वारा अधिक शीघ्र एवं अधिक सरलता से बह कर बाहर निकल जाये।''

*पश्चिमी शिष्य द्वारा १९५६ में 'योगी शिवानन्द' में प्रकाशित।

''कभी भी निराश न हों। निराशा जब हृदय में चुपचाप प्रवेश कर जाये, तो यह एक चेतावनी है कि विश्वास समाप्त हो गया है। विश्वास, धैर्य और साधना के सतत अभ्यास से अपने हृदय में से समस्त दुर्बलताओं एवं भावुकताओं को दूर कर दें। पशुत्व का अन्त, दिव्यता के प्रारम्भ का सूचक है।''

इस शाश्वत ज्ञान से, निर्देशन देने की इस तत्परता से, मैत्रीपूर्ण इस भावना से और सहायता करने की इस उत्सुकता से मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ, उनके द्वारा प्रदान की गयी श्रीमद्भगवद्गीता मैंने ली और द्वितीय अध्याय के ७१ वें श्लोकद्धद्ध

''जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर ममता रहित, अहंकार रहित और स्पृहा रहित हुआ विचरता है, वही शान्ति को प्राप्त करता है।'' को पढ़ कर मैंने अनुभव किया कि स्वामी शिवानन्द जी ने यह केवल मुझे ही नहीं, सबके लिए कहा है और यह आवाज सब तक निश्चित रूप से पहुँचनी चाहिए।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

चिदानन्द-चिन्तन

जैसा आपका विचार होगा, उसके अनुरूप ही आपका भविष्य होगा, इसलिए सदा सद्विचारों के चिन्तन का ही अभ्यास करें। यही सफलता के रहस्य की कुंजी है। यदि विचार करते-करते मन अशुभ विचारों में भटक जाये, तो उसे बार-बार उनसे बलात् प्रत्यावर्तित कर सद्-विचारों में संलग्न करें। तभी आप कुछ कर सकेंगे।

* * *

कोई भी व्यक्ति अपना अहित नहीं चाहता; किन्तु किसमें हित है और किसमें अहित, इसे कोई विरला ही जानता है। विवेक द्वारा ही हित तथा अहित में अन्तर कर पाना सम्भव है। विवेक ज्ञान से आता है और ज्ञान का उदय अज्ञान को नष्ट करने पर ही होता है।

* * *

लाख प्रयत्न करने पर भी अन्धकार विदूरित नहीं होता। चाहे जेब में करोड़ों रुपये रख कर हम घूमते रहें; किन्तु क्या अन्धकार भगाया जा सकता है? इसका स्पष्ट उत्तर यही है कि अन्धकार के निवारण के लिए उसके विरोधी गुणद्धद्धप्रकाश को लाना होगा। इसी प्रकार स्वार्थ को निःस्वार्थ भाव से ही दूर किया जा सकता है। अज्ञान मिटाने के लिए ज्ञान प्राप्त करना होगा। अवगुणों का उन्मूलन गुणों के विकास से किया जाता है। जब तक मन सात्त्विक गुणों से पूर्ण नहीं होता, पवित्र नहीं होता, तब तक भगवद्-साक्षात्कार असम्भव ही है।

* * *

अपना जीवन ऐसा बनाना चाहिए कि जिससे दूसरों को प्रसन्नता मिल सके, दूसरों को लाभ हो सके तथा दूसरों की सहायता हो सके। यदि ऐसा सम्भव न हो, तो उससे कम-से-कम दूसरों के कष्टों को, दुःखों को तो किसी प्रकार कम किया ही जा सकता है। ऐसा ही जीवन, वास्तव में जीवन है। यही हमारा धर्म है।

शिवानन्द जी की संसार को देन *

श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज

''श्री स्वामी शिवानन्द जी विश्व के सर्वश्रेष्ठ तेजस्वी व्यक्तियों में से एक हैं'', यह दुनिया-भर के सहस्रों लोगों के हृदयोद्‌गार हैं। वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जो दोषों से पूर्णतया मुक्त हैं तथा जिनमें स्वार्थपरता अथवा अहंकार का लेश मात्र भी नहीं है। उनका जीवन आत्म-साक्षात्कार, पवित्रता, शक्ति एवं ज्ञान के प्रकाश से उद्‌भासित एवं स्पर्शित है। वे वृक्षाच्छादित वन प्रान्त में अपने ऐसे चुम्बकीय व्यक्तित्व से विराजमान हैं, जो हमारे शरीर, मन और आत्मा को उन्नत करने के लिए अचूक निर्देशन प्रदान करता है, जिससे कि इस संसार में हमारा जीवन उदात्त एवं भला बन सके।

३६ वर्ष की युवावस्था में स्वामी शिवानन्द जी ने दिव्य आह्वान को सुना, अपनी समस्त सांसारिक रुचियों को छोड़ा और मलाया से हिमालय तक एक दीर्घ छलाँग लगा दी। उनका आध्यात्मिक गठन विलक्षण है और वे ऐसे वैश्व-मानव तक की सर्वोच्च ऊँचाइयों तक ऊपर उठ गये हैं, जहाँ प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वस्तु-पदार्थ में भगवान् ही उद्‌भाषित होते दीखते हैं। उनका जीवन उस सबका सारतत्त्व है जो उन नर-नारियों के निर्बल हुए शरीर, डूबते हुए मन और सोयी हुई आत्मा के लिए सर्वोत्तम नवीकरण है, ऐसे नर-नारियों के लिए जो रोग, दोष और अज्ञान के अगाध गर्त में गिरे हुए हैं।

स्वामी शिवानन्द जी शिशुवत् मुस्कराते हैं और यह मुस्कराहट प्रसन्नता एवं आनन्द विकीर्ण करती है। सहस्रों लोग, जो चिन्ताओं, निराशाओं, सांसारिक कष्टों और क्लेशों के भार तले दबे हुए स्वामी जी के सम्पर्क में आते हैं, वे धीरज, शान्ति और सुखह्वस्वामी जी की विद्यमानता में पा जाते हैं और उनके जीवन का एक नया पन्ना खुल जाता है, वे अवर्णनीय शान्ति प्राप्त करते हैं तथा अपने सुख-आनन्द को दूसरों में भी बाँटते हैं। जिस प्रकार वे मुस्कराते हुए व्यक्तिगत रूप से लोगों से मिलते-जुलते हैं, उससे अनुभव होता है कि उनके जीवन का सर्वोच्च आनन्द वैश्व-प्रेम और दानशीलता में निहित है।

इतिहास में कभी भी ऐसा आश्रम नहीं रहा, जहाँ ऐसे उच्च सिद्धान्त हों; जिसकी ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि हो कि वहाँ सभी देशों से आने वाले जिज्ञासु-साधकों के लिए उनके विकासार्थ, उनकी रुचि, स्तर तथा स्वभाव के अनुकूल अनेकों विभिन्न क्षेत्र उपलब्ध हों। अपने प्रभाव, अपनी मोहक छवि और अपनी अद्‌भुत आकर्षण-शक्ति के द्वारा स्वामी जी मानव-जाति की चेतना को आध्यात्मिक पथ की ओर उन्मुख करने में सक्षम हैं। लोग परम पावन स्वामी जी और उनके आश्रम के बहुमुखी पहलू की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। विश्व के हर कोने में, लोग उनकी उपस्थिति को अनुभव करते

*'शिवानन्दह्वह्वहमारे गुरु' में १९६३ में

हैंह्लह्लउनकी आध्यात्मिक शक्ति, सुगन्धि और प्रेम सर्वत्र व्याप्त हो कर उनके शिष्यों को शान्ति और समृद्धि पहुँचाता है। अत्यन्त सरलतापूर्वक वे आश्रम के विभिन्न विभागों का प्रबन्धन कर लेते हैं तथा विश्व के हर भाग में अपने अद्‌भुत प्रभाव से आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करते हैं।

स्वामी शिवानन्द जी धर्म के सम्बन्ध में पाण्डित्यपूर्ण प्रवचन नहीं करते; अपितु अपने प्रत्येक कार्य और शब्द के द्वारा अपनी आध्यात्मिक शक्ति को अभिव्यक्त करते हुए, अपने उदाहरण के बल से प्रमाणित करते हैं। उन्होंने विश्व-भर में लाखों लोगों का पथ-प्रदर्शन किया है तथा इसे मानव की समझ से परे तक की मात्रा तक प्रमाणित किया है। स्वामी जी की मौन प्रार्थनाओं के द्वारा, उनकी पुस्तकों के द्वारा, उनकी मुस्कान अथवा उनके कथन के द्वारा प्रभावित होने वाले सहस्रों व्यक्ति रूपान्तरित हो कर दिव्य व्यक्ति हो गये हैं।

स्वामी शिवानन्द जी आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा वैश्व-प्रेम एवं भातृ-भाव का सन्देश विश्व के हर कोने में पहुँचाते हुए, वे आज के सर्वोपरि लब्ध-प्रतिष्ठ आध्यात्मिक गुरु के रूप में जाने जाते हैं। अमर सन्त शिवानन्द का यह लौकिक निवास-स्थान, शिवानन्दनगर निस्सन्देह एक ऐसा स्वर्गलोक बन गया है जो प्रातः से रात्रि तक सात्त्विक गतिविधियों से गूँजता रहता है तथा शाश्वत आनन्दामृत प्रदान करता रहता है, केवल उन्हें ही नहीं जिनको वहाँ जाने का सौभाग्य प्राप्त है, बल्कि उन्हें भी जो सहस्रों मील दूर बैठे हैं। श्री स्वामी शिवानन्द जी दीर्घ आयुष्य हों!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

जगत्　महान् रहस्य

यह जगत् रहस्यमय है। इस रहस्य की कुंजी छिपी हुई है।

यह जगत् कहाँ से आया? हममें से बहुतों में यह शंका बनी रहती है। अपनी आत्मा पर ध्यान कीजिए। यह शंका विलीन हो जायेगी।

ईश्वर ने हिरण्यगर्भ तथा अन्य देवताओं एवं जगत् की सृष्टि की। जीव गण भी उससे उत्पन्न हुए जो कर्माधीन हैं।

सांख्य-दर्शन आत्मा की अमरता को मानता है। यह जीव के आवागमन तथा पुनर्जन्म को मानता है; परन्तु स्रष्टा की सत्ता का निषेध करता है। सांख्यों के अनुसार यह जगत् ईश्वर द्वारा नहीं रचा गया; अपितु यह प्रकृति से ही उत्पन्न है।

ईश्वर ही, जो परमात्मा है, वही प्रथम कारण है;　सारे कारणों का कारण तथा जगत् का मूल है।

काल प्रथम कारण नहीं है। प्रकृति प्रथम कारण नहीं है। प्रकृति तथा शक्ति प्रथम कारण नहीं हैं।

जगत् ईश्वर की ही विभूति है।

ईश्वर इस जगत् की रचना करता है तथा पुनः उसे विलीन कर देता है; जिस तरह मकड़ी जाले को अपने अन्दर से ही निकालती है तथा उसे अपने पेट में समेट लेती है।

ईश्वर विविध रूपों को धारण कर जगत् के रूप में प्रतीत होता है।

ईश्वर पदार्थ तथा शक्ति का नियामक है। वह सभी गुणों का स्वामी है।

यद्यपि ईश्वर सूर्य तथा चन्द्रमा से परे है, तथापि ईश्वर के विभासित होने के कारण ही वे विभासित हैं।

जिस तरह बीज में तेल, दही में मक्खन तथा काष्ठ में अग्नि है, उसी तरह ईश्वर भी सर्वत्र व्याप्त है।

स्वामी शिवानन्द

बाल-स्तम्भ :

मोटी आंटी १

स्वामी रामराज्यम्

(मोटी आंटी कभी थीं, लेकिन आज नहीं हैं नहीं, वह हमेशा रहेंगी। उनकी स्मृति उन्हें सदा-सर्वदा जीवित रखेगी। यहाँ हम उनके जीवन से जुड़े हुए कुछ प्रेरक प्रसंग धारावाहिक रूप से प्रकाशित कर रहे हैं। इन प्रसंगों को पढ़ कर उनका जो चित्र उभरता है, वह एक महामानव का चित्र है। बच्चो, इन प्रसंगों को ध्यान से पढ़ना। एक महामानव से जुड़े हुए ये प्रसंग तुम्हें पग-पग पर सत्कार्यों में लगे रहने की प्रेरणा देते रहेंगे और प्रकाशस्तम्भ बन कर तुम्हारे जीवन-मार्ग को प्रकाशित करते रहेंगे।)

१. पहला हिस्सा जरूरतमन्दों का

उन दिनों मेरी आयु तेरह-चौदह वर्ष थी। मोटी आंटी के साथ रहता था। कभी टी.वी. पर एक सीरियल देखा था। उसमें पूतना राक्षसी जैसी देखी थी, वैसी वह दिखलायी पड़ती थींह्नह्नलम्बा और मोटा शरीर, सफेद दन्तपंक्तियाँ, काला रंग। आस-पड़ोस के बच्चे उन्हें देख कर फुसफुसा कर एक-दूसरे से कहते थेह्नह्नपूतना ने अवतार लिया है। एक दिन उन्होंने मुझे यही बात कहते हुए सुन लिया। मैंने सोचा कि अब मार पड़ेगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। मेरी बात सुन कर वह खूब हँसीं। कहने लगींह्नह्न''अब तुम मुझे पूतना आंटी कहा करो।'' मैंने उन्हें इस नाम से कभी नहीं पुकारा, लेकिन कई दिनों तक वह मुझे 'पूतना आंटी के भतीजे' कह कर चिढ़ाती रहीं। अवश्य ही, हम सब बच्चे उन्हें मोटी आंटी कह कर पुकारते थे। उन्होंने कभी इस सम्बोधन पर आपत्ति नहीं की।

एक दिन उन्होंने मुझसे कहाह्नह्न''चलो, शादी में चलते हैं।''

मैंने पूछाह्नह्न''कहाँ?''

''बता दूँगी''ह्नह्नवह बोलींह्नह्न''तुम जल्दी से तैयार हो जाओ।''

मोटी आंटी मुझे झुग्गी-झोपड़ियों की एक बस्ती में ले गयीं। दूर से बाँसुरी और ढोलक की आवाज सुनायी पड़ रही थी।

मैंने फिर पूछाह्नह्न''तुम मुझे कहाँ ले जा रही हो?''

''वहींह्नह्न'' कह कर मोटी आंटी मुस्करायीं।

''अरे, कहाँ?''

''वहीं, जहाँ मेरी जरूरत है।''

मोटी आंटी की बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी। चलते-चलते उनका मुँह ताकने लगा। कुछ देर बाद हम दोनों वहाँ पहुँच गये, जहाँ कुछ लोग एकत्रित थे। हलका-सा शोर भी था। अधेड़ उम्र का एक अन्धा आदमी बाँसुरी बजा रहा था। पास ही बैठी हुए एक महिला ढोलक बजा रही । लाल साड़ी पहने हुए एक लड़की कुछ औरतों के बीच में एक मण्डप के नीचे खड़ी थी।

मोटी आंटी उस अन्धे आदमी के पास गयीं। उन्होंने उसके और उस महिला के पैर छुए। अन्धे आदमी ने बाँसुरी बजाना बन्द कर दिया। बोलाह्नह्न''कौन?''

मोटी आंटी ने मुझसे भी दोनों के पैर छूने के लिए कहा। मैंने भी उनके पैर छुए। ढोलक पर थाप देते हुए महिला के हाथ रुक गये। महिला ने पूछाह्नह्न''आप कौन हैं? कहाँ से आयी हैं?''

महिला की यह बात सुन कर मैं समझ गया कि मोटी आंटी वहाँ खड़ी हैं, जहाँ उन्हें कोई नहीं जानता।

मोटी आंटी बोलींह्न ''मैं आपकी बेटी की शादी में आयी हूँ। ये लो शगुन के रुपये।'' यह कह कर उन्होंने एक लिफाफा उसके हाथ में पकड़ा दिया। बैग से सूखे मेवों का पैकेट निकाल कर उसे भी पकड़ा दिया। फिर मुझे ले कर वह लाल साड़ी पहने हुए लड़की के पास गयीं। उसे घेर कर खड़ी हुई औरतें सहम कर हट गयीं।

मोटी आंटी ने आगे बढ़ कर उस लड़की के सिर पर हाथ फेरा। फिर पर्स से चमकीले कागज में लिपटी हुई अँगूठी निकाली और उसे लड़की की उँगली में पहना दिया।

''तुम्हारा सुहाग अचल रहे, बेटी।'' कह कर वह मुड़ीं और मुझसे बोलींह्न ''चलो, चलते हैं।''

मेरा हाथ पकड़े हुए वह वापस लौटीं। तभी अन्धे आदमी के पास बैठी हुई महिला ने आवाज लगायीह्न ''बहन जी, मुँह मीठा करके जाओ।''

मोटी आंटी रुकीं। बोलींह्न ''फिर कभी आऊँगी।''

यह कह कर वह चल दीं। रास्ते में मुझसे कहने लगींह्न ''यह अन्धा आदमी मेरे आफिस के गेट के सामने दिन-भर दरी बिछा कर बैठा रहता है। यह औरत इसकी पत्नी है। यह बाँसुरी बजाता है और यह औरत ढोलक बजाती है। लोग बिछी हुई दरी पर पैसे डाल जाते हैं। सुना है कि किसी दयावान आदमी ने इसकी बेटी की शादी का कार्ड छपवा दिया। दस-पन्द्रह दिनों से कार्ड दरी पर पड़ा हुआ दिखलायी पड़ता था। मैंने सोचा, इसके लिए कुछ करना चाहिए। अपने पास जो-कुछ होता है, उसमें पहला हिस्सा जरूरतमन्दों का होता है, वे खुद माँगें या न माँगें।''

मुझे याद है, इस घटना के बाद से वह अन्धा आदमी और उसकी पत्नी अक्सर घर पर आ जाया करते थे। उस समय मोटी आंटी का स्वागत-सत्कार देखने लायक होता था। वह दौड़-दौड़ कर खाने-पीने की चीजें रसोईघर से लाती थीं और अपने हाथों से परोसती थीं। जब तक वे दोनों खाते रहते, वे सामने बैठी रहतीं। **(क्रमशः)**

अध्यात्म-मुक्ता

सामाजिक मूल्यों, वैयक्तिक मूल्यों और आध्यात्मिक मूल्यों का युगपत् एकीकरण करने वाले सर्वोच्च विज्ञान और कला के रूप में धर्म सम्पूर्ण विश्व की परम सत्ता की ओर आकृष्ट होने की गति है। यही इसकी व्यापक आत्मा है। साथ ही यह सभी प्राणियों की आत्मा है जिसकी भव्य व्यापकता से मानव-बुद्धि अभी परिचित नहीं है और इसलिए वह अभी तक न तो समझ सकी है और न ही इसका मूल्यांकन कर सकी है।

* * *

सम्यक् कर्म करने का रहस्य यह है कि न तो कर्म-फल में आसक्ति होती है और न कर्म-त्याग की प्रवृत्ति होती है; परन्तु कर्म-फल के प्रति आसक्ति न रखने का अर्थ यह नहीं है कि कर्म-सम्पादन के प्रति असावधानी का भाव रहे तथा कर्म के मूल उद्देश्यों का ही विस्मरण हो जाये, अन्यथा यह भी स्वार्थपरता का ही एक रूप होगा।

* * *

हम प्रायः प्रकृति को जीतने की बातें करते हैं; परन्तु सत्य तो यह है कि किसी पर विजय प्राप्त करने जैसी कोई चीज नहीं है। हमें प्रत्येक को केवल मित्र बनाना है। यदि आप दूसरों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करेंगे, तो वे भी आप पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

* * *

यह संसार ईश्वर का ही शरीर है। अन्ततः किसी का निषेध नहीं हो सकता। प्रत्येक वस्तु ईश्वर-साक्षात्कार की ओर एक कदम है, इसी दृष्टि से सभी वस्तुओं के साथ प्रेम करना चाहिए। **स्वामी कृष्णानन्द**

ज्ञान-गंगा :

आध्यात्मिक प्रस्फुटन का मार्ग

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

ज्ञानयोग आत्म-साक्षात्कार का साधन है। कर्म तथा भक्ति इस लक्ष्य में सहायक हैं।

साधना किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन है। यह स्वयं लक्ष्य नहीं है।

साधना यह प्रकट करती है कि आप कौन हैं, कहाँ हैं तथा आपका भविष्य कैसा है?

साधना अथवा प्रयत्न आवश्यक है।

सत्य को जानिए तथा उसकी प्राप्ति का मार्ग भी। अन्ततः सत्य का साक्षात्कार कर लीजिए।

आध्यात्मिक मार्ग का आधार आध्यात्मिक गुरु है।

ईश्वर तथा गुरु के प्रति अपनी भक्ति में कोई भेद न रखिए।

अहंकार को नष्ट कर गुरु के उपदेशों का पालन कीजिए। यही परम धाम का मार्ग है।

विजय प्राप्त कीजिए। शरीर तथा मन का निग्रह ही इसका मार्ग है।

निम्न प्रकृति तथा भौतिक मूल्यों पर विजय पाइए। आध्यात्मिक जीवन के लिए बहुत ही सच्चाईपूर्ण आध्यात्मिक प्रशिक्षण तथा अनुभव की आवश्यकता है।

शरीर, मन तथा इन्द्रियों को अनुशासित कीजिए। ध्यान में सच्चे बनिए। आप शीघ्र ही इन्द्रिय-परायणता, जीव-भाव, मोह तथा आनन्द से मुक्त बनेंगे।

ध्यान के साथ शारीरिक आवेग, कामना तथा विचारों का नियन्त्रण ही आध्यात्मिक अनुशासन का सारांश है।

मौन-व्रत आध्यात्मिक जीवन के लिए बहुत ही सहायक है।

प्रार्थना तथा अनुशासन का उद्देश्य यह है कि मनुष्य ईश्वर के हाथ का निमित्त बन जाये, जिससे ईश्वर उसे अपने व्यवहार में ला सके।

आध्यात्मिक अनुशासन का पालन सैनिक अनुशासन से भी अधिक सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

आध्यात्मिक मार्ग में आपको सांसारिक शिक्षाओं को त्यागना होगा।

शुभ में प्रसन्नता प्राप्त कीजिए। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने का संकल्प कर लीजिए। धीर बनिए। धीरे-धीरे बढ़ते जाइए। आगे बढ़िए। बारम्बार अभ्यास कीजिए। निश्चय कीजिए। पहचानिए। साक्षात्कार कीजिएह्वह्व'मैं अमर आत्मा हूँ।' यही अनुशासन है। यही शिव का सन्देश है।

मुक्ति, मोक्ष, नित्य-सुख, आत्म-ज्ञानह्वह्वयह बाजार की वस्तु नहीं, जिसे मैं आपके हाथ पर रख दूँ।

साधक तप, अनुशासन, ध्यान तथा निम्न प्रकृति के दमन द्वारा ही ब्रह्म से योग-प्राप्ति के मार्ग का अनुगमन करता है।

आपको स्वतः आध्यात्मिक मार्ग पर चल कर लक्ष्य प्राप्त करना होगा। अतः प्रयत्न कीजिए। मेहनत कीजिए। सेवा कीजिए। प्रेम कीजिए। ध्यान कीजिए। साक्षात्कार कीजिए। ईश्वर-आशीर्वाद आपको प्राप्त हो!

प्रारम्भिक अवस्थाओं में साधक को सम्बल की आवश्यकता रहती है, जिससे वह आध्यात्मिक अनुभव के साम्राज्य में प्रवेश पा सके।

(अनुवादक : श्री स्वामी ज्योतिर्मयानन्द सरस्वती)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

आरम्भ से ही 'शिवानन्द होम' नाम होते हुए भी स्वामी चिदानन्द जी महाराज प्रायः इसे 'करुणा केन्द्र' कहा करते थे। नाम में क्या है? क्या यह केवल कहने के लिए ही होता है, अथवा यह स्वामी जी महाराज के करुणामय उद्‌गार एक समर्पण, एक निर्देशन के रूप में बह रहे हैं गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी की शिक्षाओं की भावना से परिपूर्ण हो कर? स्वामी जी महाराज एक शब्द 'समानानुभूति' अथवा 'तदानुभूति' के विषय में कहा करते थेह्नह्नयह 'तदानुभूति' एक भावना है, यह समझने, यह अनुभव करने का प्रयत्न करने की, कि अमुक व्यक्ति की परिस्थिति में हम होते तो हमें कैसा लगता।

करुणा केन्द्र में विभिन्न प्रकार के विस्तृत वर्ग के ऐसे लोगों को आश्रय प्रदान किया जाता है, जिन्हें विभिन्न प्रकार से विविध श्रेणियों में बाँटा जा सकता हैह्नह्नरोग के आधार पर, लिंग के आधार पर, आयु के आधार पर अथवा रोग की प्रकृति के आधार पर या भरती होने के समय के आधार पर। किसी भी चिकित्सालय में भरती होने की सामर्थ्य न होने के कारण, सड़क किनारे ही पड़े रहने के कारण अथवा स्वास्थ्य और रोग सम्बन्धी अज्ञानता के कारण इन लोगों की बहुविध चिकित्सा करनी होती है। औषधियों द्वारा चिकित्सा के साथ-साथ दैनिक कार्यक्रम में देखभाल अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण अंग है। और जब रोगी अपना कष्ट बताने में भी असमर्थ हो, तब उसकी पूरी देह का निरीक्षण करके घावों का पता लगाना, उसकी दैनिक गतिविधियों अथवा स्वभाव द्वारा खोज करनी होती है। उदाहरण के लिए यदि वह कुछ भी खा-पी नहीं रहा है, तो उसका कारण खोजना इत्यादि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काम हैं। विशेष रूप से वर्षा काल में 'होम' में संक्रामक रोगों जैसे संक्रामक बुखार, कृमियुक्त घाव, एन्टरिक बुखार, संक्रामक चमड़ी रोग इत्यादि जैसे रोगों से ग्रस्त रोगी आते हैं जिनकी चिकित्सा के साथ-साथ अन्य सह-रोगियों की सुरक्षा हेतु रोग की रोकथाम के प्रबन्ध भी करने होते हैं।

'शिवानन्द होम' में गत वर्षों से अब तक सैकड़ों रोगी आते और जाते रहे हैं। हरेक को अपने आवास-काल में परमात्मा की कृपा प्राप्त होती रही है तथा उनमें से बहुत से आने के बाद चिकित्सा-सुविधा प्राप्त करके ठीक हो कर चले गये; कई अपना समय आ जाने से प्रभु की शरण में चले गये और अन्य जब तक प्रभु की इच्छा है, तब तक अभी यहीं हैं। मानव प्रयत्न करता है, प्रभु की अपनी इच्छा है। उसी प्रभु से हमारी प्रार्थना है कि सबको सामर्थ्य दें कि वे उनकी पुकार सुन सकें, उनका अनुसरण करें और सही मार्ग चुन सकें। प्रभु-इच्छा पूर्ण हो! उनकी कृपा से ही उनका कार्य चल रहा है।

हरि शरणम्। गुरु शरणम्। श्री गुरु शरणम्। श्री हरि शरणम्।

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

परम आराध्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का १२४ वाँ जन्म महोत्सव

शिवानन्दगुरुं वन्दे करुणामृतवारिधिम्।
मुमुक्षूणां शरण्यं च प्रपन्नानां भयापहम्।।

''मैं अपने उन सद्गुरु शिवानन्द जी को प्रणिपात करता हूँ, जो करुणामृत के सागर हैं। वे मुमुक्षुओं के लिए एकमात्र आश्रय हैं। जो उनके शरणागत हैं, वे उन सबके भय हर लेते हैं।''

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का १२४ वाँ जन्म महोत्सव मुख्यालय आश्रम में ८ सितम्बर २०११ को अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातःकालीन ध्यान एवं प्रार्थना सत्र के साथ हुआ जिसमें परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज (उपाध्यक्ष, डी. एल. एस.) तथा परम पूज्य श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने प्रेरणाप्रद प्रवचन दिये। इसके तुरन्त बाद प्रभातफेरी आयोजित की गयी। विश्व-शान्ति एवं मानव-कल्याण हेतु आश्रम यज्ञशाला में विशेष यज्ञ आयोजित किया गया।

पूर्वाह्न सत्र में अत्यन्त सुन्दरता से सुसज्जित समाधि-मन्दिर में परम पावन गुरुदेव की पवित्र पादुकाओं की महापूजा की गयी। श्रद्धा-सुमन समर्पित करने के लिए आये हुए अतिथियों, भक्तों, ब्रह्मचारियों एवं संन्यासियों से समाधि हाल पूर्णतया भरा हुआ था। पूजन-अभिषेक के उपरान्त हमारे प्रिय गुरुदेव को महिमान्वित करते हुए भजन-कीर्तन हुए तथा परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज के गुरुदेव के जीवन एवं शिक्षाओं सम्बन्धी प्रेरणाप्रद प्रवचन हुए। इस पावन अवसर पर दो पुस्तकें अँगरजी की तथा एक मलयालम की विमोचित की गयीं।

सायंकाल में श्रद्धेय गुरुदेव की मधुर स्मृति में श्री विश्वनाथ घाट पर माँ गंगा की आरती की गयी। रात्रिकालीन सत्संग में दैनिक प्रार्थना एवं स्तोत्रों के साथ-साथ सुश्री अम्बिका (मैसूर) द्वारा गुरुदेव के पावन चरणों में पुष्पांजलि के रूप में अत्यन्त मनोहर भरतनाट्यम् नृत्य प्रस्तुत किया गया। आरती एवं विशेष प्रसाद-वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

आनन्द कुटीर के दिव्य देवता, हमारे शाश्वत निर्देशक एवं प्रेरक सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के शुभ आशीर्वाद हम सब पर हों, जिससे हम इसी जन्म में दिव्य परिपूर्णता प्राप्त कर सकें!

शिष्य से अपेक्षा

गुरु शिष्य से क्या अपेक्षा करते हैं? कुछ भी अपेक्षा नहीं करते। गुरु यदि उससे अपेक्षा करें, तो वह गुरु नहीं हैं। वह संन्यासी हो सकते हैं, योगी हो सकते हैं, सन्त हो सकते हैं; लेकिन वह गुरु नहीं हो सकते। गुरु तो शत-प्रति-शत केवल देना ही जानते हैं। वह देना ही चाहते हैं, लेना नहीं चाहते; क्योंकि उन्हें लेने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। भगवान् उनके सर्वस्व हैं। जब उन्होंने परिपूर्ण भगवान् को अपने दिल में बसा लिया है, तब इस अपूर्ण जगत् से वह कुछ लेना ही क्यों चाहेंगे? लेकिन शिष्य से गुरु यह अपेक्षा अवश्य रखते हैं कि शिष्य उनसे भी अधिक महान् बने, अधिक पवित्र बने, अधिक दिव्य बने। सारा संसार उससे प्रेरणा प्राप्त करे। गुरु चाहते हैं कि उन्हें अपने गुरु से जो-जो मिला है, वह-वह द्विगुणित हो कर उनके शिष्य को प्राप्त हो ताकि सारा जगत् उससे लाभान्वित हो सके।

स्वामी चिदानन्द

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की असीम कृपा से दिव्य जीवन संघ मालवीयनगर, जयपुर शाखा के १० सितम्बर २०११ को सद्गुरुदेव के दिव्य लक्ष्य की सेवा में २५ वर्ष पूर्ण हुए। रजत-जयन्ती के इस महिमाशाली अवसर को मनाने के उद्देश्य से शाखा द्वारा १० से ११ सितम्बर तक एक आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया गया। दिव्य जीवन संघ के महासचिव, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने सम्मेलन का उद्घाटन किया तथा उपस्थित जन-समूह को धर्मग्रन्थों में वर्णित तथा गुरुदेव की शिक्षाओं पर आधारित 'धर्म' विषय पर प्रवचन दिये। दिव्य जीवन न्यास संघ के न्यासी श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज, तथा न्यासी एवं योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के कुलपति परम पूज्य श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज, श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज, श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज मुख्यालय आश्रम से सम्मेलन में भाग लेने के लिए गये तथा सबने प्रवचन दिये। योगासन तथा ध्यान कक्षा, प्रभातफेरी तथा पादुका पूजा भी की गयी। जयपुर के भक्तों के अतिरिक्त सम्मेलन में भाग लेने के लिए पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ से भी प्रतिनिधि गये हुए थे। सन्तों को सम्मानित करने तथा सम्मेलन को सफल बनाने वाले भक्तों को सम्मानित करने के साथ सम्मेलन पूर्ण हुआ।

सर्वशक्तिमान् प्रभु एवं सद्गुरुदेव के आशीर्वाद सब पर हों!

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, डी.एल.एस मुख्यालय का सांस्कृतिक कार्यक्रम

१.	८ से ९ अक्तूबर २०११	नाभा (पंजाब)	एक दिवसीय साधना शिविर
२.	११ से १९ अक्तूबर २०११	बी एच ई एल (हरिद्वार)	योग शिविर
३.	४ से ६ नवम्बर २०११	अहमदाबाद (गुजरात)	आध्यात्मिक सम्मेलन
४.	१ से ६ दिसम्बर २०११	रायपुर (छत्तीसगढ़)	साधना शिविर
५.	७ से ८ दिसम्बर २०११	नागपुर (महाराष्ट्र)	सत्संग
६.	२२ से २३ दिसम्बर २०११	भवानीपाटना (ओडिशा)	सुभद्रा क्षेत्र रजत जयन्ती
७.	२९ दिसम्बर से १ जनवरी २०१२	राउरकेला (ओडिशा)	आध्यात्मिक सम्मेलन तथा युवा शिविर
८.	६ से ८ जनवरी २०१२	गोपालपुर (ओडिशा)	दिव्य जीवन सम्मेलन
९.	१० से १९ जनवरी २०१२	गान्धीनगर (गुजरात)	योग शिविर
१०.	२१ से २५ जनवरी २०१२	कोलकाता (पश्चिम बंगाल)	साधना शिविर

सम्पर्क सूत्र नं. ९४१२१४०३००; ९०२७०४२१२०

द डिवाइन लाइफ सोसायटी की शाखाओं के प्रतिवेदन

अहिवारा (छत्तीसगढ़): अगस्त माह में दैनिक सत्संग; प्रत्येक एकादशी को महामृत्युंजय मन्त्र का जप। ८ अगस्त को रुद्र अभिषेकम्। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का अखण्ड जप ६ घण्टों तक। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर पूजा और हवन।

अम्बाला (हरियाणा): दैनिक सायंकालीन सत्संग; दैनिक महामृत्युंजय मन्त्र-जप। प्रत्येक मंगलवार को स्तोत्र-पाठ तथा भजन। १४ अगस्त को वीडियो सत्संग। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर सामूहिक मन्त्र-जप दो घण्टों के लिए। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर पादुका पूजा तथा भजन-कीर्तन। होम्योपैथी के दो चिकित्सालयों और जल-सेवा के माध्यम से समाज-सेवा।

बढ़ियाउस्ता (ओडिशा): श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर ब्राह्ममुहूर्त साधना, पादुका पूजा, नगर-संकीर्तन, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र के जप के साथ एक लाख आहुतियों से पूजा, श्री विष्णुसहस्रनाम पारायण, पूर्वाह्न में भजन-संकीर्तन, सायंकाल में श्रीमद्भागवत-पाठ, अर्धरात्रि आरती आदि जिसमें लगभग २०० भक्त सम्मिलित हुए। भागवत-सप्ताह की अवधि में दैनिक ब्राह्ममुहूर्त साधना, प्रातः ५ भक्तों द्वारा पारायण तथा सायंकाल में श्रीमद्भागवत पर प्रवचन। पुण्यतिथि के अवसर पर ब्राह्ममुहूर्त सत्र, नगर-संकीर्तन, पादुका पूजा, भागवत-सप्ताह का समापन समारोह, ब्रह्म-भोज, नारायण-भोज, औषधि-वितरण, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जीवन तथा शिक्षाओं पर वार्ताएँ, प्रसाद-सेवन।

बरबिल् (ओडिशा): प्रत्येक सोमवार को आश्रम में साप्ताहिक सत्संग; प्रत्येक बृहस्पतिवार को भक्तों के घरों में सत्संग। चिदानन्द दिवसह्नपादुका पूजा के साथ साधना दिवस, श्रीमद्भगवद्गीता पारायण, प्रसाद-सेवन, सायंकालीन सत्संग। प्रत्येक रविवार को बालविहार कक्षाएँ। जुलाई माह में शिवानन्द धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय में ५५८ रोगियों की चिकित्सा। गुरुपूर्णिमा तथा साधना-सप्ताह के अवसरों पर ज्ञान सत्र। आराधना दिवस के अवसर पर दिन-भर आयोजित अनेक कार्यक्रम।

बेलारी (कर्नाटक): दैनिक पूजा; पादुका पूजा के साथ रविवारीय सत्संग। गुरुपूर्णिमा, आराधना दिवस तथा पुण्यतिथि के अवसरों पर अर्चना के साथ पूजा। मातृ-मण्डली द्वारा ४ से ११ जुलाई तक कक्षाओं का आयोजन। १८ जुलाई को ध्यान-यज्ञ। २३ से २८ अगस्त तक माण्डूक्य उपनिषद् पर प्रवचन।

ब्रह्मपुर, लांजीपल्ली (ओडिशा): पुण्यतिथि के अवसर पर, भजन-कीर्तन, पादुका पूजा, नारायण-भोज, वस्त्र-वितरण आदि।

भंजनगर (ओडिशा): प्रत्येक रविवार को सायंकालीन सत्संग; एकादशी सत्संग कार्यक्रमों में श्री विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का पारायण; संक्रान्ति दिवस के अवसर पर सुन्दरकाण्ड पारायण। आराधना दिवस तथा पुण्यतिथि के अवसरों पर ३५९ वें तथा ३६० वें मासिक साधना दिवस का आयोजन। पादुका पूजा, हवन, गुरु-द्वय के जीवन तथा उपदेशों पर प्रवचन और प्रसाद-सेवन। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पादुका पूजा, अर्चना, हवन, पूजा, प्रवचन। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर श्री कृष्ण पूजा, पादुका पूजा, विशेष हवन, श्रीमद्भागवत-पाठ, भजन आदि।

भुवनेश्वर (ओडिशा): दैनिक प्रातःकालीन पादुका पूजा, प्रत्येक बृहस्पतिवार को सत्संग; 'श्री राम जय राम जय जय राम' मन्त्र का अखण्ड कीर्तन, ६४ भक्तों द्वारा श्रीमद्भागवत का पारायण। २८ जुलाई, १३ अगस्त, १५ अगस्त तथा ३१ जुलाई (साधना दिवस) को विशेष सत्संग कार्यक्रम। गुरुपूर्णिमा, आराधना दिवस तथा पुण्यतिथि के अवसरों पर ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना-ध्यान, प्रभातफेरी, एक लाख अर्चना के साथ पादुका पूजा, श्री विष्णुसहस्रनामस्तोत्र-पाठ, श्रीमद्भगवद्गीता-पाठ, श्री हनुमानचालीसा-पाठ, हवन, साधु-सेवा, अन्नदान (गुरुपूर्णिमा के अवसर पर आनन्दाश्रम के १२० बालकों तथा पुण्यतिथि के अवसर पर दो अन्य अनाथालयों के बालकों को); प्रसाद-सेवन। आराधना दिवस के अवसर पर पूज्य श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी द्वारा सायंकालीन सत्र में गुरु-तत्त्व, गुरुपूर्णिमा, स्वामी शिवानन्द का जीवन तथा उपदेश विषयों पर प्रवचन। पुण्यतिथि के अवसर पर वीडियो शो। साधना सत्र (१६ से २३ जुलाई) में ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना-ध्यान, पूज्य श्री स्वामी आनन्दस्वरूपानन्द जी द्वारा प्रवचन, योगासन कक्षा, एक लाख आहुतियों से पादुका पूजा, सायंकालीन प्रवचन सत्रों में 'दैनिक जीवन में भगवद्गीता' विषय पर प्रवचन। अन्य कार्यक्रमह्नह्न(१) रथयात्रा तथा श्री जगन्नाथ सहस्रनाम अर्चना, (२) ५, ६ तथा ७ जुलाई को 'जीवन का मूल प्रश्न' विषय पर प्रवचन, (३) बलभद्र जयन्ती : राखी पूर्णिमा को श्री बलभद्रसहस्रनाम अर्चना, (४) श्री कृष्ण जयन्ती : 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का अखण्ड जप २४ घण्टों तक, (५) युवा कार्यक्रम : श्री गीता के बारहवें अध्याय के पाठ पर आधारित प्रतियोगिता; उड़िया तथा अँगरेजी भाषाओं में विश्व-प्रार्थना, निबन्ध-लेखन तथा आध्यात्मिक विषयों पर वक्तृता।

बीकानेर (राजस्थान): दोनों समय दैनिक पूजा; स्वाध्याय के साथ साप्ताहिक सत्संग; सुन्दरकाण्ड पारायण के साथ मातृ-सत्संग। चिदानन्द दिवस के अवसर पर हवन। शिवानन्द पुस्तकालय तथा निर्धन छात्रों को छात्रवृत्तियाँ। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर विशेष पूजा तथा भजन-कीर्तन। पुण्यतिथि के अवसर पर पादुका पूजा तथा पूज्य श्री स्वामी जी से सम्बन्धित संस्मरणों पर आधारित प्रवचन। मन्दबुद्धि बाल विद्यालय तथा अन्य विद्यालय के छात्रों को फलादि का वितरण। १७ जुलाई से १५ अगस्त तक रामचरितमानस का संगीतमय पारायण। श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्तीह्नह्न

सन्त तुलसीदास के जीवन तथा शिक्षाओं पर आधारित प्रवचन। श्री सुन्दरकाण्ड का पारायण। सोमवती अमावस्था के अवसर पर विशेष पूजा।

बिलासपुर (छत्तीसगढ़): शिवानन्द दिवस तथा चिदानन्द दिवस के अवसर पर सत्संग कार्यक्रम। १३ अगस्त को बच्चों के लिए सत्संग। १४ अगस्त को साधना दिवस। १३, १४, १५ और १६ अगस्त को श्री रामचरितमानस पर प्रवचन। पुण्यतिथि के अवसर पर प्रातःकाल में पादुका पूजा तथा सायं में विशेष सत्संग तथा महामन्त्र कीर्तन।

छत्रपुर (ओडिशा): दैनिक सत्संग, बृहस्पतिवारों को साप्ताहिक सत्संग, तीन परिवार सत्संग कार्यक्रम। शिवानन्द दिवस तथा चिदानन्द दिवस पर पादुका पूजा। संक्रान्ति को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण। श्री तुलसीदास जयन्ती के अवसर पर विशेष सत्संग। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर विशेष पूजा-अर्चना। पुण्यतिथि के अवसर पर प्रभातफेरी, पादुका पूजा, गीता स्वाध्याय, श्री रामचरितमानस का पाठ, महामन्त्र कीर्तन, भोजन-वस्त्र का वितरण।

चिकिति (ओडिशा): श्री शरतचन्द्रदेव जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर १०० विद्यालयों में योग कार्यक्रम। अगस्त माह में पाँच विद्यालयों के ११४५ विद्यार्थियों को योगासन, प्राणायाम तथा नैतिक मूल्यों में मार्गनिर्देशन। ज्ञान-यज्ञ के रूप में विद्यार्थियों में आध्यात्मिक पुस्त्क्षिकाओं का वितरण। श्री कृष्ण जयन्ती, पुण्यतिथि तथा पूज्य श्री स्वामी शिवानन्दगुरुसेवानन्द जी की जन्म जयन्ती के अवसरों पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन।

दिगपहांडी (ओडिशा): प्रतिदिन दोनों समय पूजा; प्रत्येक रविवार और बृहस्पतिवार को सत्संग। शिवानन्द दिवस तथा चिदानन्द दिवस के अवसरों पर पादुका पूजा। संक्रान्ति को विशेष सत्संग कार्यक्रम। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पादुका पूजा, भजन-कीर्तन, पूज्य श्री स्वामी रामकृपानन्द जी द्वारा प्रवचन। आराधना दिवस के अवसर पर पादुका पूजा, भजन-कीर्तन, नारायण-भोज तथा सभी प्रतिभागियों की विशेष भोजन-सेवा। पुण्यतिथि के अवसर पर पादुका पूजा तथा भजन-कीर्तन। श्री कृष्ण जयन्ती तथा नन्द उत्सव के अवसरों पर द्वि दिवसीय उत्सव। विशेष साधना दिवस के अवसर पर पूज्य देव जी की जन्मशताब्दी के कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श; गंजम जनपद की सभी शाखाओं के पदाधिकारियों की प्रतिभागिता, प्रसाद-वितरण। सिंह संक्रान्ति के अवसर पर प्रातःकालीन पादुका पूजा, सायंकालीन विशेष सत्संग। १० जुलाई को एक भक्त के निवासस्थान पर विशेष पादुका पूजा।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): श्री रामचरितमानस का मास पारायण। राखी पूर्णिमा के दिन विशेष सत्संग तथा पादुका पूजा। श्री कृष्ण जयन्ती के अवसर पर, विशेष पूजा, भजन-कीर्तन, आरती, भोग, प्रसाद-वितरण आदि।

गान्धीनगर (गुजरात): २५ अगस्त को सत्संग कार्यक्रम। ६ अगस्त को पूज्य श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी द्वारा प्रवचन। श्री कृष्ण जयन्ती तथा पुण्यतिथि के अवसरों पर विशेष कार्यक्रम। होम्योपैथी चिकित्सोपचार-सेवा।

घरी (मणिपुर): २३ जून को श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रवचन तथा सत्संग कार्यक्रम। २९ जून को श्री राधा जी पर तथा ३१ जुलाई को श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रवचन।

सूचना

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल का वार्षिक साधना शिविर २१ से २५ जनवरी २०१२ तक मानव सेवा ट्रस्ट कॉम्प्लैक्स, हामिरागाच्छी, रेलवे स्टेशनह्नह्नमालिया, पश्चिम बंगाल में होगा।

पंजीकरण राशिह्नह्नपश्चिम बंगाल के प्रतिनिधियों के लिए ₹३००/- प्रति व्यक्ति तथा अन्य राज्यों से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए ₹१००/- होगी।

नामांकन की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर २०११ है तथा नामांकन के लिए फार्म **श्री विजय स्वाँई, ४ सी, मेहेर अली मंडल स्ट्रीट, मोमिनपुर, कोलकाता ७०० ०२७, पश्चिम बंगाल** को भेजने होंगे।

नामांकन तथा अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क-सूत्र :

डा. पी. के. सामन्तरे, मो. नं. ०९००२०८०५१४; श्री सी. बी. सहगल, मो. नं. ०९८३०१४४१४७; श्री नितुल पारिख, मो. नं. ०९८३००४०७३०; श्री प्रफुल्ल महापात्र, मो. नं. ०९४३८३०३६२४ और श्री विजय स्वाँई, मो. नं. ०९३३९३९२८४५

सभी भक्तों से अनुरोध है कि शिविर में भाग लें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी